

दर्या

वार्षिक हिंदी पत्रिका

अंक : विशेषांक, वर्ष - 2025



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2), जयपुर
(संयोजक : प्रधान कार्यालय, उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर)

दर्पण

* संपादक मंडल *



संरक्षक
श्री अशोक माहेश्वरी
अपर महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे
जयपुर



मुख्य संरक्षक
श्री अमिताभ
महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे
एवं अध्यक्ष नराकास (कार्यालय-2)
जयपुर



परामर्शदाता
श्री शिवेन्द्र मोहन
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
वरिष्ठ उप महाप्रबंधक, उपरे, जयपुर



प्रधान संपादक
श्रीमती ऋतु शुक्ला
अपर महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो
एवं पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर



डॉ. लक्ष्मण राम बुडलक
निदेशक
कदन्न विकास निदेशालय, जयपुर



श्री कपिल सिंघल
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं उप मुख्य सामग्री प्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर



श्री शिवचरण बैरवा
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
एवं सदस्य सचिव नराकास (कार्यालय-2), जयपुर



अमिताभ

महाप्रबंधक

Amitabh

General Manager

एवं अध्यक्ष

नराकास (कार्यालय-2)



उत्तर पश्चिम रेलवे

प्रधान कार्यालय, जवाहर सर्किल के पास,

मालवीय नगर, जयपुर-302017

NORTH WESTERN RAILWAY

Headquarter Office, Near Jawahar Circle,

Malviya Nagar, JAIPUR-302017

Ph. 0141-2725800 (Off.)

0141-2725816 (Fax)

अध्यक्ष की कलम से...

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2) द्वारा राजभाषा पत्रिका 'दर्पण' के विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पत्रिका के माध्यम से एक ओर जहाँ केन्द्रीय कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में हो रहे कार्यों को साझा किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने लेख, कविताएँ तथा अन्य रचनात्मक लेखन प्रस्तुत करने का एक सशक्त मंच भी उपलब्ध हो रहा है। इससे उनकी सृजनात्मक क्षमता को प्रोत्साहन मिलने के साथ-साथ हिंदी भाषा के प्रति रुचि भी बढ़ेगी और अन्य अधिकारी-कर्मचारी भी इससे लाभान्वित होंगे।

हमारा संवैधानिक कर्तव्य है कि हम संविधान में निहित भावनाओं का सम्मान करते हुए अपने दैनिक सरकारी कार्यों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। मौजूदा परिवेश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए देश की विभिन्न भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए संवैधानिक प्रावधानों के अनुरूप राजभाषा हिन्दी को समृद्ध बनाने का प्रयास करें।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि हिन्दी को केवल कार्य की भाषा के रूप में न अपनाकर उसे अपने विचार, अभिव्यक्ति और संवाद की भाषा भी बनाएं। यही हमारी वास्तविक शक्ति है।

'दर्पण' पत्रिका के इस विशेषांक के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ, जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से इस विशेषांक को साकार किया है।

शुभकामनाओं सहित।

(अमिताभ)

महाप्रबंधक

संपादकीय



नराकास (कार्या.-2), जयपुर की पत्रिका 'दर्पण' का यह विशेषांक - 2025 आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। पाठकों से प्राप्त सकारात्मक प्रतिक्रिया एवं उत्साह को दृष्टिगत रखते हुए इस विशेषांक को विषयवस्तु की दृष्टि से अधिक सारगर्भित, समसामयिक एवं उद्देश्यपरक करने का प्रयास किया गया है।

हिंदी पत्रिकाएँ न केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती हैं, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रभावी कार्यान्वयन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसी उद्देश्य से इस विशेषांक में भारतीय संस्कृति, प्रशासनिक कार्यप्रणाली, तकनीकी नवाचार एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़े एवं उपयोगी लेखों को सम्मिलित किया गया है।

इस विशेषांक में “श्रीकृष्ण की शिक्षाएँ और आज का बदलता संसार”, “हिंदी: आत्मा की भाषा, एकता का आधार”, “संस्कृत भाषा का हिंदी के विकास में योगदान” तथा “राजभाषा हिंदी” जैसे लेख शामिल किए गए हैं जो हिंदी भाषा की वैचारिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय भूमिका को सशक्त रूप में प्रस्तुत करते हैं। वहीं “कार्यालयी तकनीकी शब्दावली: कार्यकुशलता की कुंजी”, “प्रसार भारती: नई उड़ान - ओटीटी प्लेटफॉर्म 'वेक्स'” तथा “डिजिटल मुद्रा-ई-रुपया: भारत का मौद्रिक भविष्य” जैसे लेख प्रशासन एवं तकनीक के क्षेत्र में हिंदी की उपयोगिता को रेखांकित करते हैं।

यह विशेषांक राजभाषा नीति के अनुपालन में नराकास स्तर पर की जा रही गतिविधियों को साझा करने का एक सशक्त मंच है तथा सदस्य कार्यालयों के मध्य अनुभवों के आदान-प्रदान को भी प्रोत्साहित करता है।

अतः इस विशेषांक के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी लेखकगण, विभागाध्यक्षों एवं संपादक मंडल के समस्त सदस्यों के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिनके प्रयासों से यह विशेषांक साकार रूप ले सका।

धन्यवाद।

श्रुति शुक्ला
(ऋतु शुक्ला)

अपर महानिदेशक

केंद्रीय संचार ब्यूरो एवं पत्र सूचना कार्यालय
जयपुर

सचिव का संदेश



नराकास (कार्या.-2), जयपुर की पत्रिका 'दर्पण' के इस विशेषांक-2025 के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह विशेषांक हिंदी भाषा के सतत विकास, राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

राजभाषा हिंदी शासकीय कार्यों में सरलता, स्पष्टता एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करने के साथ-साथ कर्मचारियों और आमजन के बीच सशक्त संवाद का माध्यम भी है। दर्पण पत्रिका इस दिशा में एक सार्थक प्रयास है, जो सदस्य कार्यालयों के मध्य विचारों, अनुभवों एवं श्रेष्ठ कार्य-प्रणाली के आदान-प्रदान का मंच प्रदान करती है।

यह विशेषांक समसामयिक विषयों, प्रशासनिक अनुभवों, सामाजिक सरोकारों तथा साहित्यिक सृजन का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करता है। इसमें सम्मिलित विषयवस्तु निश्चय ही पाठकों को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित करेगी तथा राजभाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी।

मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को नई दिशा प्रदान करेगा।

अंत में पत्रिका के इस प्रकाशन को मूर्त रूप देने वाले विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, संपादक मंडल के सभी सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके कारण इस पत्रिका का प्रकाशन हो सका है।

धन्यवाद।


(शिवचरण बैरवा)

सदस्य सचिव एवं वरि. राजभाषा अधिकारी
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्या 2-जयपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय-2, जयपुर

दर्पण

संयोजक कार्यालय : राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, उत्तर-पश्चिम रेलवे, जयपुर
अंक : विशेषांक, वर्ष - 2025

मुख्य संरक्षक अमिताभ महाप्रबंधक *** संरक्षक अशोक माहेश्वरी अपर महाप्रबंधक *** परामर्शदाता शिवेन्द्र मोहन मुख्य राजभाषा अधिकारी *** प्रधान सम्पादक ऋतु शुक्ला अपर महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो एवं पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर *** सम्पादक शिवचरण बैरवा वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी *** संपादक मंडल राजभाषा विभाग उत्तर पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय, जयपुर *** संपर्क सूत्र राजभाषा विभाग, उत्तर पश्चिम रेलवे प्रधान कार्यालय, जयपुर मो. नं. 9001195029	क्र.सं. लेख	लेखक	पृष्ठ सं.
	1. श्रीकृष्ण की शिक्षाएँ और आज का बदलता संसार	पवन कुमार शर्मा	7
	2. मैं भिन्न हूँ	डॉ. आनंद खत्री	8
	3. प्रसार भारती : नई उड़ान - ओटीटी प्लेटफॉर्म वेव्स (WAVES)	सतीश देशपाल	9
	4. डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया, भारत का मौद्रिक भविष्य	राजेश त्रिवेदी	13
	5. मन हमारा - एक रणभूमि	नीतू सिंह बारैठ	17
	6. हिंदी: आत्मा की भाषा, एकता का आधार	भारत कुमार स्वामी	18
	7. दोस्ती	गोविन्द शर्मा	20
	8. राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर - एक परिचय विहंगावलोकन	कुलपति प्रो. संजीव शर्मा	21
	9. रंग का अपना महत्व	डॉ. अरुणिमा गुप्ता	24
	10. परवरिश	पूनम बत्रा	25
	11. कुछ अलग कर जाओ तुम	अंकिता कानोडिया	26
	12. राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की प्रगति का सारांश	डॉ. कौशल गुप्ता	35
	13. राह संघर्ष की	बी.एन.जाजोरिया	36
	14. भारत का संविधान लिखने वाली महिलाएं : एक अनकही गौरव गाथा	निशिकांत अग्रवाल	37
	15. संस्कृत भाषा का हिन्दी के विकास में योगदान	जितेन्द्र कुमार चौहान	40
	16. फूल, कलियां और पत्तियां	जे.पी. मौर्य	41
	17. सोशल मीडिया का विवेकपूर्ण उपयोग : डिजिटल युग में संतुलन की कला	दीपक भारद्वाज	42
	18. हिंदी कहानी परंपरा : यथार्थ और कल्पना का समन्वय	विमलेश कुमार पाण्डेय	44
	19. जल शक्ति अभियान और जल जीवन मिशन की सफलता की कहानी	आदित्य शर्मा	46
	20. राजस्थान के GI टैग: कला, संस्कृति और शिल्प की विशिष्ट पहचान	मोहम्मद आकिब खान	51
	21. AI को समझना: कार्यक्षमता बढ़ाने से लेकर मानसिक क्षमता पर प्रभाव तक	ज्योति मीना	52
	22. उधर रह गया	राजकुमार सिंह	53
	23. नमक आयुक्त संगठन (SCO): उत्तरदायित्व, उपलब्धियाँ एवं आधुनिक प्रबंधन की दिशा में प्रगति	डॉ. तारा चंद तैवर	54
	24. जिन्दगी	रेखा चुघ	56
	25. हम भारत के लोग	विशाल	57
	26. राजभाषा हिन्दी	सिकंदर साहनी	58

इस प्रत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं, कविता आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों व रचनाकारों के अपने हैं जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है। - संपादक मंडल

श्रीकृष्ण की शिक्षाएँ और आज का बदलता संसार

पवन कुमार शर्मा



आज का युग तकनीक, गति और प्रतिस्पर्धा का युग है। भौतिक विकास के इस दौर में मनुष्य ने सुविधाएँ तो बहुत प्राप्त कर ली हैं, परंतु मन की शांति और जीवन का संतुलन कहीं पीछे छूट गया है। ऐसे समय में श्रीकृष्ण का जीवन और उनकी शिक्षाएँ हमें एक स्थिर दीपक की तरह सही मार्ग दिखाती हैं। वे केवल एक धार्मिक चरित्र नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक पूर्ण कला हैं, जो हर युग में उतनी ही सार्थक है।

श्रीकृष्ण का संपूर्ण जीवन संघर्षों से भरा रहा, लेकिन उन्होंने कभी परिस्थितियों के सामने स्वयं को कमजोर नहीं होने दिया। आज जब छोटी-छोटी असफलताएँ भी व्यक्ति को तोड़ देती हैं, श्रीकृष्ण का जीवन हमें सिखाता है कि समस्या से भागना नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता से समाधान निकालना ही सच्चा साहस है। उनका जीवन यह संदेश देता है कि धैर्य और विवेक के साथ लिया गया निर्णय ही भविष्य को सही दिशा देता है।

गीता में दिया गया उनका उपदेश – “कर्मण्येवाधिकारस्ते” – आज के समय में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। आज का मनुष्य केवल परिणाम, पद, प्रशंसा और तुलना की दुनिया में उलझ गया है। श्रीकृष्ण की यह शिक्षा हमें बताती है कि हमें अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से करना चाहिए और फल ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। यही सोच व्यक्ति को चिंता, भय और तनाव से मुक्त करती है।

आज के सामाजिक जीवन में रिश्तों की गर्माहट

कम होती जा रही है। आभासी दुनिया ने वास्तविक भावनाओं का स्थान ले लिया है। ऐसे समय में श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता यह याद दिलाती है कि प्रेम और संबंध धन और पद से नहीं, बल्कि हृदय से जुड़ते हैं। यदि आज का समाज इस भावना को अपनाए, तो टूटते हुए रिश्तों को फिर से जोड़ा जा सकता है।

राजनीति, प्रशासन और समाज में नैतिकता का हास एक गंभीर समस्या बन चुका है। स्वार्थ, भ्रष्टाचार और अनुचित लाभ की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। श्रीकृष्ण का जीवन हमें यह सिखाता है कि शक्ति का उपयोग सदा धर्म, सत्य और न्याय के लिए करना चाहिए। उन्होंने युद्ध तक का मार्ग तभी चुना, जब अन्य सभी उपाय विफल हो गए। यह आज के नेतृत्व के लिए एक बड़ा संदेश है कि शक्ति अंतिम विकल्प होनी चाहिए, पहला नहीं।

डिजिटल युग में जहाँ सूचनाओं की बाढ़ है, वहीं भ्रम और असमंजस भी उतना ही बढ़ गया है। श्रीकृष्ण का जीवन संतुलन का प्रतीक है। वे हमें बताते हैं कि जीवन में केवल कामयाबी ही नहीं, बल्कि मानसिक शांति भी उतनी ही आवश्यक है। भौतिक और आध्यात्मिक संतुलन ही मानव को संपूर्ण बनाता है।

आज की युवा पीढ़ी को दिशा देने के लिए श्रीकृष्ण का संदेश अत्यंत उपयोगी है। वे हमें यह सिखाते हैं कि आत्मविश्वास, कठिन परिश्रम और सही उद्देश्य के बिना कोई भी लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। वे हमें यह

विश्वास दिलाते हैं कि परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, यदि नियत शुद्ध हो तो विजय निश्चित होती है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि श्रीकृष्ण अतीत की कोई कथा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के सशक्त मार्गदर्शक हैं। आज जब मानवता अनेक संकटों से गुजर रही है, तब श्रीकृष्ण की शिक्षाएँ हमें एक बेहतर, संतुलित और नैतिक समाज की दिशा दिखाती हैं। यदि

हम उनके विचारों को जीवन में आत्मसात कर लें, तो व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ समाज और राष्ट्र का भी उत्थान संभव है।

अधीक्षक, राजभाषा प्रकोष्ठ
एमएनआईटी जयपुर।

मैं भिन्न हूँ



मैं स्वलीन हूँ, नहीं, मैं भिन्न हूँ
मैं कौन हूँ, माँ का दुलारा हूँ, दृढ़ संकल्प हूँ
मैं कौन हूँ, पिता का लाडला हूँ, स्वाभिमान हूँ
मैं जो भी हूँ, बस यूँही हूँ
सादा हूँ, सच्चा हूँ
कुसूरवार नहीं, बस थोड़ा मजबूर हूँ
जब कह पाता, कह देता हूँ
जो दिखता है, वही कहता हूँ
जब सुनता हूँ, समझ जाता हूँ
शोर से उद्वेलित हो जाता हूँ
जब आँखों में देखता हूँ, विचलित हो जाता हूँ
अजनबी से लगते हैं, सब समझ नहीं पाता
इशारों में समझाता हूँ, व्यवहार से दर्शाता हूँ
कुछ समझ पाते हैं, कुछ अपना लेते हैं, मैं उनका हो जाता हूँ
मैं भिन्न हूँ, अपनापन और सादगी की चाहत हूँ

मैं भिन्न हूँ
क्यों मैं भिन्न हूँ?
छोटी सी दुनिया है मेरी, उसी में सब खोजता हूँ
मैं अकेला हूँ, संवेदनशील हूँ, पर कठोर नहीं हूँ
समाज में भिन्न हूँ, फिर भी उससे अभिन्न हूँ
खुद में प्रसन्न हूँ, मैं सन्न हूँ, बेसन्न हूँ, मैं मग्न हूँ, मैं भिन्न हूँ
मैं भिन्न हूँ।



डॉ. आनंद खत्री
बालरोग विभाग

प्रसार भारती : नई उड़ान - ओटीटी प्लेटफॉर्म वेव्स (WAVES)

सतीश देशपाल



भारत के राष्ट्रीय लोक सेवा प्रसारक ने अपने नए इनोवेटिव ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफॉर्म, वेव्स (वर्ल्ड ऑडियो एंड एंटरटेनमेंट) के लॉन्च के साथ डिजिटल स्ट्रीमिंग की दुनिया में एक महत्वपूर्ण कदम रखा है।

प्रसार भारती ने 20 नवंबर 2024 को पणजी, गोवा में आयोजित 55वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में वेव्स का उद्घाटन किया था। इस वेव्स ओटीटी प्लेटफॉर्म को भारतीय मनोरंजन के लिए एक क्रांतिकारी बदलाव बताया गया है, जो वेव्स - पारिवारिक मनोरंजन की नई लहर टैगलाइन के तहत नवाचार और सांस्कृतिक संरक्षण का संयोजन करता है।

भारत के राष्ट्रीय लोक प्रसारक के रूप में, प्रसार भारती ने बदलते मीडिया परिदृश्य के साथ निरंतर विकास करने का प्रयास किया है।

वेव प्लेटफॉर्म की शुरुआत इस प्रतिबद्धता का प्रमाण है, जिसका उद्देश्य दूरदर्शन और आकाशवाणी की समृद्ध विरासत को आज के डिजिटल दर्शकों की गतिशील मांगों के साथ जोड़ना है।

यह प्लेटफॉर्म 12 से अधिक भारतीय भाषाओं में टीवी शो, वृत्तचित्र, क्षेत्रीय सामग्री और फिल्मों प्रदान करता है, जिनमें हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली, मराठी, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु, तमिल, गुजराती, पंजाबी और असमिया शामिल हैं।

वेव्स पर उपलब्ध सामग्री इन्फोटेनमेंट की 10

शैलियों में फैली है और इसमें रामायण, महाभारत, शक्तिमान और हम लोग जैसे पुराने क्लासिक शो शामिल हैं।

प्रसार भारती का यह वेव ओटीटी प्लेटफॉर्म, वीडियो ऑन डिमांड, फ्री-टू-प्ले गेमिंग, रेडियो स्ट्रीमिंग, लाइव टीवी स्ट्रीमिंग, 65 लाइव चैनल, वीडियो और गेमिंग सामग्री के लिए कई इन-ऐप इंटीग्रेशन और ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC) समर्थित सरकारी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन शॉपिंग भी प्रदान कर रहा है।

अब हम दूरदर्शन राजस्थान को भी मोबाइल पर वेव्स (WAVE) App को डाउनलोड करके देख सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, वेव्स राष्ट्रीय क्रिएटर पुरस्कार विजेता कामिया जानी, आरजे रौनक और श्रद्धा शर्मा जैसे कंटेंट क्रिएटर्स को भी अपना प्लेटफॉर्म प्रदान कराने के साथ ही अयोध्या से प्रभु श्रीराम लला की आरती और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा मासिक मन की बात जैसे कार्यक्रमों का लाइव प्रसारण भी कर रहा है।

प्रसार भारती के वेव्स की उपलब्धता:

जहां तक उपलब्धता का सवाल है, प्रसार भारती का वेव्स एंड्रॉइड यूजर्स (Android) के लिए गूगल प्ले स्टोर और आईफोन (iphone) व आईपैड (ipad) यूजर्स के लिए ऐपल के ऐप स्टोर के माध्यम से उपलब्ध है।

यद्यपि ऐप/प्लेटफॉर्म डाउनलोड करने और कंटेंट देखने के लिए कुछ प्रीमियर को छोड़कर कोई शुल्क नहीं है।

प्रसार भारती के वेक्स सब्सक्रिप्शन प्लान:

प्रसार भारती के वेक्स इच्छुक प्रीमियर कंटेंट के लिए तीन सब्सक्रिप्शन प्लान प्रदान करता है। यहाँ सभी विवरण दिए गए हैं:

1. प्लैटिनम प्लान: इस प्लान की कीमत 999 रुपये प्रति वर्ष है और यह अल्ट्रा एचडी स्ट्रीमिंग के साथ-साथ सभी कंटेंट तक असीमित पहुँच प्रदान करता है, जिसमें अधिकतम चार डिवाइस तक सपोर्ट शामिल है। इस प्लान में ऐड्स की मुफ्त डाउनलोड सुविधा उपलब्ध है।

2. डायमंड प्लान: इस प्लान की कीमत 350 रुपये प्रति वर्ष है और यह सीमित कंटेंट तक पहुँच प्रदान करता है, जिसमें अधिकतम दो डिवाइस पर HD क्वालिटी में मूवी, रेडियो और लाइव टीवी शामिल हैं। इस प्लान में ऐड्स के साथ डाउनलोड सुविधा भी उपलब्ध है।

3. गोल्ड प्लान: इस प्लान की कीमत 30 रुपये प्रति माह है और यह एक ही डिवाइस पर HD क्वालिटी में लाइव टीवी और रेडियो एक्सेस प्रदान करता है। इस प्लान में कोई डाउनलोड सुविधा उपलब्ध नहीं है।

वेक्स की मुख्य विशेषताएँ:

ऐप/प्लेटफॉर्म डाउनलोड करने और कंटेंट देखने के लिए कुछ प्रीमियर को छोड़कर कोई शुल्क नहीं है।

विविध सामग्री लाइब्रेरी : 1856 से अधिक फीचर फिल्मों और 590 शो, लगभग 9295 ई-पुस्तकें और पत्रिकाएँ, जिनमें विभिन्न शैलियाँ शामिल हैं, जो युवाओं और पुरानी पीढ़ी दोनों की ज़रूरतों को पूरा करती हैं।

लाइव चैनल और रेडियो: WAVES 74 से अधिक लाइव टीवी चैनलों और विभिन्न रेडियो स्टेशनों तक पहुँच प्रदान करता है, जिससे वास्तविक समय में मनोरंजन और जानकारी सुनिश्चित होती है। इंटरैक्टिव गेम, लाइव इवेंट और यहाँ तक कि ऑनलाइन शॉपिंग भी उपलब्ध है, जो इसे वन-स्टॉप मनोरंजन केंद्र के रूप में स्थापित करता है।

बहुभाषी समर्थन: हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली, मराठी, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु, तमिल, गुजराती, पंजाबी और असमिया सहित 12 से अधिक भारतीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध है, जो हमारे देश की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती है। यह प्लेटफॉर्म भारतनेट अवसंरचना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के दर्शकों सहित विविध प्रकार के दर्शकों के लिए समावेशी मनोरंजन लाने के लिए तैयार है।

उपयोगकर्ता-अनुकूल सुविधाएँ: वीडियो ऑन-डिमांड, ई-बुक्स, गेमिंग और ONDC के माध्यम से एकीकृत ई-कॉमर्स सुविधा जैसे विकल्प, उपयोगकर्ता जुड़ाव और अनुभव को बेहतर बनाते हैं।

सुगम्यता: एंड्रॉइड और iOS दोनों प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध, व्यापक पहुँच और सुविधा सुनिश्चित करता है।

हमारा प्लेटफॉर्म एक अनूठा और बेजोड़ उपयोगकर्ता अनुभव (UX) प्रदान करता है।

यह प्लेटफॉर्म सिर्फ एक डिजिटल उद्यम नहीं है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक कहानियों को पुनर्जीवित करने और उन्हें आधुनिक माध्यमों से प्रस्तुत करने का एक आंदोलन है। समकालीन सामग्री के साथ पुरानी यादों को जोड़कर, वेक्स हर भारतीय के लिए एक समग्र मनोरंजन स्थल बनने की आकांक्षा रखता है।

यह प्लेटफॉर्म सामाजिक जागरूकता अभियानों को भी एकीकृत करता है, जैसे कि सीडैक के सहयोग से एक साइबर सुरक्षा पहल, जो वेक्स को सिर्फ एक मनोरंजन ऐप से कहीं अधिक बनाती है।

प्रसार भारती टीम, आकाशवाणी और दूरदर्शन, के अथक प्रयासों से यह संभव हो पाया है।

प्रसार भारती के समर्पण ने इस दृष्टिकोण को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विभिन्न प्रौद्योगिकियाँ:

ओटीटी: एक ओवर-द-टॉप मीडिया सेवा वीडियो और ऑडियो की एक डिजिटल वितरण सेवा है जो दर्शकों तक किसी ओवर-द-एयर, केबल, सैटेलाइट या आईपीटीवी प्रदाता के माध्यम से नहीं बल्कि सीधे सार्वजनिक इंटरनेट के माध्यम से पहुँचाई जाती है। ऐसी सेवाएँ सदस्यता-आधारित या निःशुल्क हो सकती हैं। यह शब्द स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म का पर्याय है।

स्ट्रीमिंग: स्ट्रीमिंग मीडिया, मीडिया प्लेयर का उपयोग करके प्लेबैक के लिए नेटवर्क के माध्यम से वितरित मल्टीमीडिया को संदर्भित करता है। मीडिया को सर्वर से क्लाइंट तक पैकेटों की एक धारा में स्थानांतरित किया जाता है और वास्तविक समय में प्रस्तुत किया जाता है। यह फ़ाइल डाउनलोडिंग के विपरीत है, एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें अंतिम उपयोगकर्ता उपभोग करने से पहले पूरी मीडिया फ़ाइल प्राप्त करता है।

वीडियो ऑन डिमांड (वीओडी): एक मीडिया वितरण प्रणाली है जो उपयोगकर्ताओं को अनुरोध पर वीडियो, टेलीविजन शो और फ़िल्टर को डिजिटल रूप से एक्सेस करने की अनुमति देती है।

ब्लूटूथ : एक छोटी दूरी की वायरलेस तकनीक मानक है जिसका उपयोग कम दूरी पर स्थिर और मोबाइल डिवाइस के बीच डेटा का आदान-प्रदान करने और पर्सनल एरिया नेटवर्क (पीएएन) बनाने के लिए किया जाता है।

हाईलाईट : यह 2.402 GHz से 2.48 GHz (ISM) तक के ISM बैंड में UHF रेडियो तरंगों को प्रसारित करता है - ISM रेडियो बैंड रेडियो स्पेक्ट्रम के वे भाग हैं जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर औद्योगिक, वैज्ञानिक और चिकित्सा (ISM) के लिए आरक्षित हैं।

2010 में डिजीविव ने भारत का पहला मोबाइल ऐप नेक्सजीटीवी लॉन्च किया।

वैश्विक ओटीटी कंपनियाँ हैं: नेटफ्लिक्स और अमेज़न प्राइम वीडियो - 2016 ।

हॉटस्टार : अब जियो हॉटस्टार भारत में सबसे ज्यादा सब्सक्राइब किया जाने वाला ओटीटी प्लेटफॉर्म है, जिसका स्वामित्व जियो स्टार के पास है। फरवरी 2025 तक इसके 5000 मिलियन सक्रिय उपयोगकर्ता और 650 मिलियन से ज्यादा डाउनलोड थे।

नेटफ्लिक्स: अमेरिकी स्ट्रीमिंग सेवा नेटफ्लिक्स ने जनवरी 2016 में भारत में प्रवेश किया। अब तक नेटफ्लिक्स के 6 मिलियन सब्सक्राइबर हैं।

अमेज़न प्राइम वीडियो: 2016 में लॉन्च किया गया।

इरोस न्यू: इरोस इंटरनेशनल द्वारा लॉन्च किया गया एक ओटीटी प्लेटफॉर्म, भारत में ओटीटी प्रदाताओं में सबसे ज्यादा सामग्री प्रदान करता है, जिसमें 12,000 से ज्यादा फ़िल्में, 1,00,000 संगीत ट्रैक और एल्बम और 100 टीवी शो शामिल हैं।

प्रसार भारती का ओटीटी प्लेटफॉर्म सुविधाओं से भरपूर है, जो अत्याधुनिक सुविधाओं के माध्यम से एक बेहतर वीडियो देखने और बहुउद्देश्यीय अनुभव सुनिश्चित करता है, जिनमें शामिल हैं:

1. आसान लॉगिन प्रक्रिया

हमारे आधुनिक लॉगिन सिस्टम का उपयोग करके आसानी से वैयक्तिकृत अनुशंसाओं और विशिष्ट सामग्री तक पहुँच प्राप्त करें।

2. स्मार्ट खोज

हमारी सहज खोज सुविधा के साथ अपनी पसंदीदा फ़िल्में, टीवी शो, वेब सीरीज़, ट्रेडिंग सामग्री और बहुत कुछ आसानी से खोजें, जिससे एक सहज सामग्री खोज अनुभव सुनिश्चित होता है।

3. ट्रेडिंग सामग्री

अन्य उपयोगकर्ताओं के बीच क्या लोकप्रिय है,

इसके साथ अपडेट रहें और अपनी इंटरनेट स्पीड के अनुसार गतिशील रूप से समायोजित, इष्टतम वीडियो गुणवत्ता के साथ ट्रेडिंग सामग्री देखें।

4. आसान नेविगेशन

मोबाइल ऐप या वेबसाइट पर, सहज और उपयोगकर्ता-अनुकूल इंटरफ़ेस के साथ, प्लेटफ़ॉर्म के विभिन्न अनुभागों को आसानी से ब्राउज़ करें।

5. विस्तृत सामग्री लाइब्रेरी

उच्च परिभाषा में फिल्मों और वेब सीरीज़ के विस्तृत चयन तक पहुँच प्राप्त करें, जो एक आकर्षक और इमर्सिव उपयोगकर्ता अनुभव प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

6. लाइव स्ट्रीमिंग

रीयल-टाइम मनोरंजन के लिए, अपने डिवाइस और इंटरनेट बैंडविड्थ के आधार पर, SD, HD या UHD गुणवत्ता में लाइव इवेंट, टीवी शो और बहुत कुछ का आनंद लें।

7. गेमिंग हब

प्लेटफ़ॉर्म पर उपलब्ध विभिन्न प्रकार के इंटरैक्टिव गेम्स का आनंद लें, जो वीडियो सामग्री से परे एक मज़ेदार और गतिशील मनोरंजन विकल्प प्रदान करते हैं।

8. ई-बुक और पीडीएफ व्यूअर

प्लेटफ़ॉर्म पर सीधे ई-बुक, दस्तावेज़ों और अन्य पीडीएफ तक पहुँचें और पढ़ें, जिससे उपयोगकर्ताओं के लिए शैक्षिक और सूचनात्मक अनुभव बेहतर हो।

9. ओएनडीसी शॉपिंग इंटीग्रेशन

ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ओएनडीसी) के साथ हमारे एकीकरण के माध्यम से विभिन्न प्रकार के उत्पादों की सहज खरीदारी करें। कृपया ध्यान दें कि प्रसार भारती केवल ओएनडीसी के लिए एक प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करता है और ओएनडीसी के माध्यम से प्रदान किए जाने

वाले किसी भी लेनदेन, उत्पाद की गुणवत्ता या सेवाओं की ज़िम्मेदारी नहीं लेता है। सभी बातचीत, विवाद और समाधान केवल उपयोगकर्ता और ONDC के बीच हैं।

10. लचीले देखने के विकल्प

मोबाइल फ़ोन, टैबलेट और स्मार्ट टीवी सहित कई उपकरणों पर लाइव और ऑन डिमांड सामग्री देखें, जिससे आपको सामग्री देखने के तरीके में लचीलापन मिलता है।

11. निर्बाध प्लेबैक

बफ़रिंग समस्याओं के बिना निर्बाध वीडियो स्ट्रीमिंग का अनुभव करें, जिससे सभी उपयोगकर्ताओं के लिए सुचारू प्लेबैक सुनिश्चित होता है।

12. किफ़ायती सब्सक्रिप्शन प्लान

मासिक, त्रैमासिक या वार्षिक आधार पर उपलब्ध बजट-अनुकूल सब्सक्रिप्शन प्लान में से चुनें, जो लचीलापन और मूल्य प्रदान करते हैं।

13. समर्पित ग्राहक सहायता

हमारी ग्राहक सहायता टीम किसी भी प्रश्न या समस्या में सहायता के लिए 24/7 उपलब्ध है, जिससे हमारे सभी उपयोगकर्ताओं को एक परेशानी मुक्त अनुभव सुनिश्चित होता है।

प्रसार भारती ओएनडीसी, गेम्स और तृतीय पक्ष सामग्री जैसी होस्टिंग सेवाओं के लिए प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करता है, लेकिन इन तृतीय-पक्ष सेवाओं की गुणवत्ता, सटीकता, वैधता या उनसे उत्पन्न होने वाले किसी भी विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं है। सभी लेन-देन और बातचीत संबंधित सेवा प्रदाताओं की एकमात्र ज़िम्मेदारी हैं।

वेब्स प्रसार भारती द्वारा विकसित एक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म है। इसका उद्देश्य भारत में स्ट्रीमिंग सेवाओं की बढ़ती माँग को पूरा करना है।

डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया, भारत का मौद्रिक भविष्य

राजेश त्रिवेदी



वित्तीय प्रौद्योगिकी में तेज़ी से हो रही प्रगति के मद्देनज़र, दुनिया भर के देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं के लिए संभावित परिवर्तनकारी कारक के रूप में केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्राओं पर विचार कर रहे हैं। यह किसी देश की वैध मुद्रा का एक डिजिटल रूप है, जिसे उसके केंद्रीय बैंक द्वारा जारी और विनियमित किया जाता है। भारत के लिए, जहाँ अर्थव्यवस्था तेज़ी से डिजिटल लेनदेन और वित्तीय समावेशन पर आधारित हो रही है, इस की अवधारणा में परिवर्तनकारी क्षमताएँ हैं। भारतीय संदर्भ में डिजिटल रुपये के कार्यान्वयन के औचित्य, डिज़ाइन, चुनौतियों और संभावनाओं पर गहराई से चर्चा करता है।

डिजिटल रुपया

(e₹) या ई-रुपया भारतीय रुपये का एक टोकनयुक्त डिजिटल संस्करण है, जिसे भारतीय रिज़र्व बैंक

द्वारा केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा के रूप में जारी किया जाता है। डिजिटल रुपया जनवरी 2017 में प्रस्तावित किया गया था और 1 दिसंबर 2022 को लॉन्च किया गया था। यह ब्लॉकचेन वितरित-लेज़र तकनीक का उपयोग करता है।

बैंक नोटों की तरह, यह विशिष्ट रूप से पहचान योग्य होगा और केंद्रीय बैंक द्वारा विनियमित होगा। इसकी ज़िम्मेदारी RBI की होगी। योजनाओं में ऑनलाइन और ऑफलाइन पहुँच शामिल है। RBI ने अंतर-बैंक निपटान

के लिए वित्तीय संस्थानों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए थोक के लिए डिजिटल रुपया (e₹-W) और उपभोक्ता और व्यावसायिक लेनदेन के लिए खुदरा के लिए डिजिटल रुपया (e₹-R) लॉन्च किया। डिजिटल रुपये के कार्यान्वयन का उद्देश्य आम जनता, व्यवसायों, बैंकों और RBI द्वारा भौतिक मुद्रा पर वहन की जाने वाली सुरक्षा मुद्रण लागत को हटाना है, जो पहले ₹49,848,000,000 थी।

आरबीआई द्वारा जारी 2021 की मुद्रा और वित्त रिपोर्ट के अनुसार, संप्रभु द्वारा समर्थित सीबीडीसी को प्रत्यक्ष हस्तांतरण द्वारा मौद्रिक लेनदेन की गुमनामी और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना चाहिए। इसे राष्ट्रीय और वैश्विक धन शोधन और आर्थिक आतंकवाद कानूनों का



अनुपालन करना होगा। आरबीआई ने शुरुआत में दिसंबर 2021 के लिए सी डिजिटल रुपये परीक्षणों के पहले चरण की योजना बनाई थी; हालाँकि, बाद में इसे 2022 की पहली तिमाही के लिए पुनः निर्धारित किया गया, जिसमें चरणों में राष्ट्रव्यापी रोलआउट की योजना बनाई गई। प्रारंभिक अध्ययन जल्द ही किया जाएगा, आरबीआई ने कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल लेनदेन में वृद्धि का हवाला देते हुए डिजिटल रुपये के दायरे, कानूनी ढाँचे, अंशांकन, तकनीक, वितरण और सत्यापन तंत्र पर आंतरिक मूल्यांकन शुरू कर दिया है।

सीबीडीसी मूलतः किसी देश की प्रचलित मुद्रा का डिजिटल प्रतिनिधित्व है। क्रिप्टोकॉइन्स के विपरीत, जो विकेंद्रीकृत और अक्सर अस्थिर होती हैं, सीबीडीसी विनियमित, स्थिर और सीधे केंद्रीय बैंक से जुड़ी होती है। चीन, स्वीडन और बहामास जैसे देश पहले ही सीबीडीसी को लागू या प्रायोगिक तौर पर लागू कर चुके हैं, जो वित्तीय प्रणालियों के आधुनिकीकरण की इसकी क्षमता को दर्शाता है। भारत में, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बेहतर मौद्रिक नीति प्रभावशीलता, कम लेनदेन लागत और बेहतर वित्तीय समावेशन जैसे लाभों का हवाला देते हुए डिजिटल रुपये की शुरू करने के अपने इरादे का संकेत दिया है।

1. **वित्तीय समावेशन:** भारत ने जन धन योजना जैसी पहलों के माध्यम से वित्तीय समावेशन में उल्लेखनीय प्रगति की है। हालाँकि, आबादी का एक बड़ा हिस्सा अभी भी बैंकिंग सेवाओं से वंचित है। एक सीबीडीसी सुरक्षित, सुलभ और कम लागत वाले डिजिटल भुगतान प्रदान करके इस अंतर को पाट सकता है।
2. **लागत दक्षता:** भौतिक नकदी की छपाई, भंडारण और परिवहन में काफी लागत आती है। सीबीडीसी एक डिजिटल विकल्प प्रदान करके इन खर्चों को कम कर सकता है।
3. **छाया अर्थव्यवस्था का मुकाबला:** एक डिजिटल मुद्रा पारदर्शिता बढ़ा सकती है और नकद लेनदेन को कम करके कर चोरी को कम कर सकती है, जो अक्सर पता लगाने योग्य नहीं होते हैं।
4. **मौद्रिक नीति कार्यान्वयन:** वास्तविक समय के लेनदेन डेटा की पेशकश करके, सीबीडीसी आरबीआई को अधिक प्रभावी मौद्रिक नीतियों को लागू करने के लिए सशक्त बना सकता है।

5. **वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता:** जैसे-जैसे चीन जैसे देश डिजिटल युआन के साथ बढ़त हासिल कर रहे हैं, भारत वैश्विक डिजिटल मुद्रा की दौड़ में पीछे नहीं रह सकता।

भारत के लिए डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया डिजाइन करने में कई बातों पर विचार करना शामिल है:

1. **तकनीक:** ब्लॉकचेन तकनीक पारदर्शिता और सुरक्षा प्रदान करती है, जो इसे डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया के लिए एक व्यवहार्य विकल्प बनाती है। हालाँकि, वितरित लेजर तकनीक (DLT) जैसे विकल्पों पर भी विचार किया जाना चाहिए।
2. **परिचालन मॉडल:**
 - प्रत्यक्ष मॉडल: RBI सीधे डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया जारी और प्रबंधित करेगा।
 - हाइब्रिड मॉडल: RBI डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया जारी करता है, लेकिन वित्तीय संस्थान इसे वितरित करते हैं।
3. **अंतर-संचालनीयता:** यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया मौजूदा डिजिटल भुगतान प्रणालियों के साथ सहजता से एकीकृत हो।
4. **गोपनीयता और सुरक्षा:** लेन-देन की पारदर्शिता और उपयोगकर्ता की गोपनीयता के बीच संतुलन बनाना विश्वास बनाने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

भारत में डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया के कार्यान्वयन में चुनौतियाँ:-

1. डिजिटल डिवाइड

भारत एक गंभीर डिजिटल डिवाइड का सामना कर रहा है, जहाँ लाखों लोगों के पास विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी, स्मार्टफोन या बुनियादी डिजिटल साक्षरता तक पहुँच नहीं है। जहाँ शहरी क्षेत्रों में उन्नत डिजिटल

बुनियादी ढाँचा उपलब्ध है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर अपर्याप्त सुविधाओं का सामना करना पड़ता है। डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया की शुरुआत के लिए अंतिम उपयोगकर्ताओं के पास डिजिटल उपकरणों, इंटरनेट कनेक्शन और डिजिटल भुगतान प्रणालियों का उपयोग करने की समझ होनी आवश्यक है।

2. साइबर सुरक्षा जोखिम

एक डिजिटल परिसंपत्ति के रूप में, डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया स्वाभाविक रूप से साइबर हमलों, हैकिंग और धोखाधड़ी के प्रति संवेदनशील होते हैं। राष्ट्रव्यापी डिजिटल मुद्रा प्रणाली की सुरक्षा सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। दुर्भावनापूर्ण तत्व वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करने, व्यक्तिगत डेटा चुराने या लेनदेन में हेरफेर करने के लिए डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया प्रणालियों को निशाना बना सकते हैं, जिससे संभावित रूप से आर्थिक और सामाजिक अराजकता पैदा हो सकती है।

भारत लगातार साइबर हमलों का निशाना बना रहा है, इसलिए डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया से जुड़े जोखिम बढ़ गए हैं। देश में निजी और सार्वजनिक दोनों संस्थानों में हाल के वर्षों में उल्लंघनों का अनुभव हुआ है, जो साइबर सुरक्षा तैयारियों में कमियों को दर्शाता है। डिजिटल मुद्रा - ई-रुपये की शुरुआत पहले से ही कमजोर साइबर परिदृश्य में जटिलता की एक और परत जोड़ देगी।

3. बुनियादी ढाँचे की तैयारी

डिजिटल मुद्रा - ई-रुपये के कार्यान्वयन के लिए जारी करने, वितरण और लेनदेन प्रक्रिया का समर्थन करने हेतु एक मज़बूत तकनीकी और वित्तीय बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होती है। अपनी विशाल और विविध जनसंख्या के साथ, भारत में इस तरह के बुनियादी ढाँचे को कुशलतापूर्वक लागू करने में अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

बुनियादी ढाँचे की मापनीयता एक और महत्वपूर्ण कारक है। भारत यूपीआई जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से प्रतिदिन अरबों डिजिटल लेनदेन दर्ज करता है। एक डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया प्रणाली को भी लगभग उतनी ही, यदि उससे अधिक नहीं, तो लेनदेन की मात्रा को निर्बाध रूप से संभालने की आवश्यकता होगी। इसे प्राप्त करने के लिए उच्च-विश्वसनीयता वाले सर्वरों, विश्वसनीय डेटा भंडारण समाधान और पूरे देश में निर्बाध इंटरनेट कनेक्टिविटी की आवश्यकता होगी।

इसके अलावा, डिजिटल मुद्रा - ई-रुपये को मौजूदा भुगतान प्रणालियों, एटीएम और पॉइंट-ऑफ-सेल (पीओएस) उपकरणों के साथ एकीकृत करना अतिरिक्त चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि तकनीक पश्चगामी-संगत हो और दक्षता या सुरक्षा से समझौता किए बिना पुरानी प्रणालियों के साथ काम कर सके।

4. नियामक ढाँचा

एक सुस्पष्ट नियामक ढाँचे का अभाव भारत में डिजिटल मुद्रा - ई-रुपये के कार्यान्वयन के लिए एक बड़ी चुनौती है। डिजिटल

मुद्रा शुरू करने के लिए स्वामित्व अधिकार, धोखाधड़ी की स्थिति में दायित्व और विवाद समाधान तंत्र जैसे मुद्दों को हल करने हेतु कानूनी प्रावधानों की आवश्यकता होगी।

5. आर्थिक व्यवधान

सीबीडीसी की शुरुआत से भारत की पारंपरिक बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली में उथल-पुथल मचने की



संभावना है। वाणिज्यिक बैंक, जो वर्तमान में जमा राशि जुटाने और ऋण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, अगर व्यक्ति और व्यवसाय अपना पैसा बैंक खातों के बजाय सीबीडीसी वॉलेट में रखना शुरू कर दें, तो उन्हें बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

6. जन जागरूकता और विश्वास

सीबीडीसी की सफलता के लिए जनधारणा और विश्वास अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बहुत से लोग डिजिटल मुद्रा के काम करने के तरीके को पूरी तरह से नहीं समझ पाते हैं या इसकी सुरक्षा, उपयोगिता और लाभों के बारे में गलत धारणाएँ पाल सकते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग यह मान सकते हैं कि सीबीडीसी बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकॉरेंसी के समान हैं, जिनकी अक्सर उनकी अस्थिरता के लिए आलोचना की जाती है।

7. कार्यान्वयन की लागत

सीबीडीसी प्रणाली के डिज़ाइन, परिनियोजन और रखरखाव में पर्याप्त वित्तीय निवेश शामिल होता है। तकनीक विकसित करने से लेकर कर्मियों को प्रशिक्षित करने और जन जागरूकता अभियान चलाने तक, सीबीडीसी के कार्यान्वयन से जुड़ी लागतें महत्वपूर्ण हैं। भारत जैसे देश में, जहाँ संसाधन अक्सर सीमित होते हैं, सीबीडीसी के लिए धन आवंटित करने का अर्थ स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा या बुनियादी ढाँचे के विकास जैसे अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों से संसाधनों को हटाना हो सकता है। इन प्रतिस्पर्धी प्राथमिकताओं में संतुलन बनाने के लिए सावधानीपूर्वक योजना और निर्णय लेने की आवश्यकता होगी।

8. गोपनीयता संबंधी चिंताएँ

सीबीडीसी वित्तीय लेनदेन में पारदर्शिता प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, जिससे कर चोरी और अन्य अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने में मदद मिल सकती है। हालाँकि, अत्यधिक पारदर्शिता व्यक्तियों और

व्यवसायों के लिए गोपनीयता संबंधी चिंताओं को जन्म दे सकती है। उदाहरण के लिए, यदि सभी लेनदेन रिकॉर्ड किए जाते हैं और नियामकों के लिए सुलभ होते हैं, तो यह वित्तीय गोपनीयता के अधिकार पर सवाल उठा सकता है। पारदर्शिता और गोपनीयता के बीच संतुलन बनाना यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि सीबीडीसी जनता द्वारा स्वीकार किए जाएँ।

9. ग्रामीण और कम साक्षरता अनुकूलन

भारत की ग्रामीण आबादी और कम साक्षरता स्तर वाले व्यक्तियों को सीबीडीसी को समझने और अपनाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इस बाधा को दूर करने के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस डिज़ाइन करना और कई क्षेत्रीय भाषाओं में ग्राहक सहायता प्रदान करना आवश्यक है। प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और व्यावहारिक प्रदर्शन ग्रामीण और कम शिक्षित आबादी के बीच विश्वास बनाने में मदद कर सकते हैं। स्थानीय समुदाय के नेताओं, स्वयं सहायता समूहों और गैर सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करने से पहुँच को और सुगम बनाया जा सकता है और यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सीबीडीसी देश के हर कोने तक पहुँचें।

e₹-R वाणिज्यिक बैंकिंग प्रणाली के बाहर होगा जो वाणिज्यिक बैंकों के माध्यम से मध्यस्थता वाली भुगतान प्रणालियों में तरलता और ऋण जोखिमों की एकाग्रता को कम करने में मदद कर सकता है। RBI के अनुसार, डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया उपयोगकर्ताओं के लिए एक अतिरिक्त भुगतान एवेन्यू होगा और मौजूदा भुगतान प्रणालियों को बदलने के लिए नहीं है। डिजिटल मुद्रा - ई-रुपया के पीछे का उद्देश्य बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था का समर्थन और प्रोत्साहन करना, भौतिक नकदी प्रबंधन की लागत को कम करना, एक कुशल मौद्रिक भुगतान प्रणाली बनाना और वित्तीय समावेशन को

और बढ़ाना है। डिजिटल रुपया मूल्य में बदलाव के बिना कागजी मुद्रा में परिवर्तनीय है और विश्वास, सुरक्षा, तरलता, निपटान की अंतिमता और अखंडता का निर्माण करने के लिए RBI की बैलेंस शीट में दिखाई देगा। मुद्रा परिसंचरण में एक नई तकनीक को पेश करने के जोखिम को कम करने के लिए, RBI डिजिटल रुपये की विशेषताओं को कागजी मुद्रा के करीब डिजाइन करेगा और इसे सहज तरीके से पेश करेगा

हालाँकि भारत में डिजिटल मुद्रा - ई-रुपये का कार्यान्वयन कई चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है, लेकिन ये बाधाएँ दुर्गम नहीं हैं। सावधानीपूर्वक योजना, हितधारक सहयोग और समावेशिता के प्रति प्रतिबद्धता के साथ, भारत इन बाधाओं को दूर कर सकता है और डिजिटल मुद्रा की परिवर्तनकारी क्षमता को उजागर कर सकता है। इन चुनौतियों का सक्रिय रूप से समाधान करके, भारत भविष्य

के लिए एक सुरक्षित, कुशल और समावेशी वित्तीय प्रणाली के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

भारत में केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा की शुरुआत न केवल एक तकनीकी बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है, बल्कि धन की धारणा और उपयोग में भी एक आदर्श परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। चुनौतियों का सक्रिय रूप से समाधान करके और भारत के डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र का लाभ उठाकर, RBI CBDC को देश की डिजिटल अर्थव्यवस्था की आधारशिला के रूप में स्थापित कर सकता है। हालाँकि यह यात्रा जटिलताओं से भरी होगी, लेकिन इसके दीर्घकालिक लाभ डिजिटल मुद्रा - ई-रुपये को भारत के आर्थिक भविष्य के लिए एक आशाजनक उद्यम बनाते हैं।

दक्षता निरीक्षक, सामान्य विभाग,
प्रधान कार्यालय, उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर

मन हमारा - एक रणभूमि

नीतू सिंह बारैठ

मन के भीतर एक रणभूमि,
जहाँ दिन-रात संघर्ष होता,
एक ओर चाहत जाग उठती तो
एक ओर शंकाएं रहती।

इच्छाएँ पंख लगाना चाहें,
डर कदम रोकने आता,
आशा कहती- “चल आगे”,
शंका वापस लौट बुलाती।

कभी लगता सब संभव है,
कभी सब धुंध में खो जाता,
मन की ये उलझन जैसे
खुद से ही सवाल है पूछा करती।

पर इसी उलझन में छिपी
एक छोटी-सी रोशनी रहती,
जो कहती- “अपने भीतर झाँको,
यही तुम्हारी असली शक्ति।”

अंतर्द्वंद्व भले ही भारी हो,
पर रास्ता वहीं निकलता,
जहाँ मन डर से नहीं,
अपने विश्वास से चलता।

यही संघर्ष तो हमें सिखाता है-
टूटकर भी कैसे जुड़ते हैं,
मन के हर छोटे युद्ध से
हम थोड़ा-थोड़ा बढ़ते हैं।

हिन्दी शिक्षिका, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय 3, जयपुर

हिंदी: आत्मा की भाषा, एकता का आधार

भारत कुमार स्वामी



मनुष्य का सबसे बड़ा आविष्कार पहिया नहीं, भाषा है। पहिया हमें आगे बढ़ाता है, लेकिन भाषा हमें सोचने की क्षमता देती है। इसीलिए भाषा केवल संचार का साधन नहीं, बल्कि चेतना का रूप है - वही चेतना जिससे संवाद और समाज दोनों संभव होते हैं। भारत में यही स्वरूप हिंदी का है। हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भावनाओं, अनुभवों और चिंतन का सेतु है। यह हमारे भीतर की वह धारा है जो विचारों को आकार देती है और मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है। यहाँ भाषा केवल ध्वनि नहीं रह जाती, बल्कि संस्कृति की वाहक बन जाती है।

जब हम कहते हैं कि हिंदी हमारी “आत्मा की भाषा” है, तो इसका अर्थ केवल मातृभाषा नहीं, बल्कि वह संवेदना है जिसमें यह देश सांस लेता है। परंतु आज यह विरोधाभास है कि हम अपनी ही भाषा से संकोच करने लगे हैं। गाँवों से लेकर महानगरों तक विद्यालयों पर “इंग्लिश मीडियम” का बोर्ड मानो सम्मान-पत्र की तरह लटकता है, और समाज इसे गुणवत्ता का प्रतीक मान लेता है। हम भूल गए हैं कि बच्चे को पहले उसी भाषा में सिखाना चाहिए जो उसकी समझ की भाषा हो - जिसमें वह सोच सके, प्रश्न कर सके और उत्तर खोज सके। भाषा का उद्देश्य संप्रेषण है, न कि प्रतिष्ठा का प्रदर्शन। यही कारण है कि मातृभाषा में शिक्षा ज्ञान का सबसे सशक्त माध्यम बनती है।

विज्ञान भी कहता है कि मनुष्य का मस्तिष्क उन्हीं अवधारणाओं को गहराई से समझ सकता है जो उसकी

सोचने की भाषा में हों। नोम चॉम्स्की और सपीर-व्हॉर्फ जैसे भाषावैज्ञानिक बताते हैं कि मातृभाषा ही विचारों की संरचना और हमारी वास्तविकता की सीमाएँ तय करती है। अतः मातृभाषा में शिक्षा न केवल समझ बढ़ाती है, बल्कि रचनात्मकता भी विकसित करती है। यह भ्रम कि “भाषा बदलने से बुद्धिमत्ता बढ़ जाती है”, आज हमारी शिक्षा और समाज दोनों में गहराई तक पैठ गया है। जबकि सच्चाई यह है कि कोई भी भाषा श्रेष्ठ या निकृष्ट नहीं होती - श्रेष्ठ होती है वह सोच, जो भाषा के माध्यम से व्यक्त होती है। यहीं से यह प्रश्न उठता है - जब हिंदी इतनी सक्षम है, तो हम उससे दूरी क्यों बना रहे हैं?

हिंदी केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि संवेदना का संस्कार है। हमारी लोककथाएँ, भजन, लोकगीत और कहावतें - ये सब हमारी सामूहिक स्मृति का हिस्सा हैं जिन्हें हिंदी ने संरक्षित रखा है। यह हमें सिखाती है कि विविधता विभाजन नहीं, सौंदर्य है। हिंदी एक ऐसी नदी है जिसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, उर्दू, फ़ारसी, अरबी, अंग्रेज़ी - सबके स्रोत मिलते हैं। ‘किताब’ अरबी से, ‘सड़क’ फ़ारसी से, ‘आज़ादी’ उर्दू से, ‘स्कूल’ अंग्रेज़ी से और ‘ज्ञान’ संस्कृत से आया। पर जब ये सब शब्द हिंदी में साथ चलते हैं, तो किसी को पराया नहीं लगते। यही हिंदी की आत्मा है- वह बाँटती नहीं, जोड़ती है। यही उसकी वास्तविक शक्ति है- वह बहती रही, इसलिए जीवित रही।

यदि हमें “ऑक्सफ़र्ड डिक्शनरी में दस हिंदी शब्द”

जुड़ने पर गर्व होता है, तो यह भी याद रखना चाहिए कि हिंदी ने स्वयं असंख्य भाषाओं को अपनाया है- फ़ारसी, अरबी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, पुर्तगाली, मराठी, अवधी, ब्रज, उर्दू, पंजाबी, हरियाणवी - सब इसकी गोद में समाए हैं। यही हिंदी की विराटता है - यह समाहित करती है, अस्वीकार नहीं करती।

हम आमतौर पर कहते हैं- “उर्दू या कोई अन्य भाषा कठिन है।” कठिनाई भाषा में नहीं, हमारे अपरिचय में होती है। एक ही भाव को विभिन्न भाषाओं में देखा जा सकता है।

देवनागरी में - “समय बदलने पर मन विचार करने लगता है।”

और उर्दू भावार्थ में-“दिल दरिया-ए-तहकीक में उतरता है, जब फ़साना-ए-वक्त की गर्दिशें गुफ्तगू करती हैं।”

मीर तकी मीर के “इश्क़ को चाहिए इक उम्र असर होने तक” का वही भाव तुलसीदास के “प्रेम भया जब नाम सुमिरा” में झलकता है। भाषा का अंतर केवल आवरण है; भावों की गहराई वही रहती है।

आज हम “लेट्स गो यार”, “ओके भाई”, “वह बहुत स्मार्ट” है जैसे वाक्य बोलते हैं। यह हिंग्लिश का युग है, और यह परिवर्तन हिंदी भाषा की मृत्यु नहीं, बल्कि उसका पुनर्जन्म है। कुछ लोग इसे पतन मानते हैं, पर यह हमारे समय की वास्तविकता है। भाषा जीवित होती है तो बदलती है; वह जमती नहीं, बहती है। हाँ, बोलचाल में लचीलापन उचित है, पर लेखन में उसकी मर्यादा बनाए रखना आवश्यक है - यही संतुलन भाषा को जीवित भी रखता है और सशक्त भी।

भाषा का सबसे कोमल रूप तब दिखाई देता है जब एक माँ अपने बच्चे को लोरी सुनाती है। वह किसी पुस्तक की भाषा नहीं बोलती, बल्कि अपने हृदय की भाषा बोलती है। वही लोरी आगे चलकर बच्चे के

संस्कारों और राष्ट्र की आत्मा का रूप लेती है। “सो जा मेरे लालना, राम करे तू बहुत बड़ा हो जाए।” - यह वाक्य नहीं, आशीर्वाद है। माँ की बोली में जो ताप है, वह किसी अनुवाद में नहीं आ सकता। यही भाषा का चमत्कार है - यह भावों को शब्द देती है और शब्दों को आत्मा।

भारत में कोई पंजाबी “सत श्री अकाल”, मराठी “जय महाराष्ट्र”, तमिल “वनक्कम” कहता है और फिर सब मिलकर “नमस्ते” कहते हैं - यही हिंदी का चमत्कार है। यह सबको जोड़ती है, किसी को तोड़ती नहीं। हमारी संस्कृति के शब्द - “संस्कार, कर्म, आत्मा, माया, श्रद्धा” - ऐसे विचार हैं जिनके पूर्ण अर्थ अंग्रेज़ी में नहीं मिलते। “स्पिरिट” या “सोल” ‘आत्मा’ के आधे भी नहीं हैं। यह हिंदी की नहीं, अंग्रेज़ी की सीमा है।

यदि हमें आत्मनिर्भर समाज चाहिए, तो अपनी भाषा में आत्मविश्वास भी चाहिए। भाषा केवल विषय नहीं, विचार की बुनियाद है। हिंदी में विज्ञान पढ़ाना “लोकप्रियता” नहीं, “लोकजागरण” है। जब तक सोच उधार की भाषा में होगी, तब तक मौलिकता भी उधार रहेगी। जापान, चीन और रूस जैसे देशों ने अपनी भाषा में विज्ञान और तकनीक को अपनाकर यही सिद्ध किया है।

आज हिंदी केवल भारत की नहीं, बल्कि वैश्विक संवाद की भाषा बन रही है। विदेशों में बसे भारतीय समुदाय - फ़िजी, मॉरिशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम, अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया - में इसका प्रयोग बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में दिए गए भाषण अब वैश्विक विमर्श का हिस्सा बन चुके हैं। वर्तमान के इंटरनेट युग में हिंदी की पहुँच अभूतपूर्व है। यह केवल सांस्कृतिक प्रवाह नहीं, बल्कि डिजिटल युग में भाषाई आत्मनिर्भरता का प्रमाण है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों पर हिंदी सामग्री उपभोक्ताओं की संख्या अंग्रेज़ी से कहीं अधिक है। यह तकनीक और संस्कृति के संगम का प्रतीक है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है - किसी पर थोपने के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता के सेतु के रूप में। यह प्रशासन को जनता की भाषा में बोलने की दिशा में एक कदम है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग इस दिशा में निरंतर कार्यरत है, ताकि हिंदी केवल फ़ाइलों की भाषा न रहे, बल्कि “संचार की संस्कृति” बने। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने मातृभाषा और भारतीय भाषाओं में शिक्षा पर जो बल दिया है, वह सांस्कृतिक पुनर्जागरण का संकेत है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानों और विश्वविद्यालयों में अब हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी तकनीकी सामग्री उपलब्ध हो रही है। “सोलर एनर्जी” का हिंदी रूप “सौर ऊर्जा” न केवल सरल है, बल्कि अर्थ में अधिक सटीक भी है। “आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस” जब “कृत्रिम बुद्धिमत्ता” कहलाती है, तो उसमें विज्ञान के साथ दर्शन भी झलकता है। इससे स्पष्ट है कि हिंदी कविता या कहानी ही नहीं, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा बनने की पूरी क्षमता रखती है।

हिंदी का भविष्य डिजिटल, वैश्विक और वैज्ञानिक है। अब यह केवल “राजभाषा” नहीं, बल्कि “विश्वभाषा” बनने की दिशा में अग्रसर है। जैसे अन्य विकसित देशों की संस्कृति और तकनीक साथ खड़ी हैं, वैसे ही हिंदी अब भारत की “सॉफ्ट पावर” का आधार बन रही है।

भाषा कभी छोटी या बड़ी नहीं होती। वह उतनी ही बड़ी होती है, जितना बड़ा उसका हृदय और जितनी गहरी उसकी संवेदना होती है। हिंदी का हृदय विशाल है - यह जोड़ती है, सिखाती है, समझाती है और सबसे बढ़कर, यह हमें हमारी पहचान से मिलाती है।

कनिष्ठ अनुवादक, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, जयपुर

दोस्ती

गोविन्द शर्मा

सब भेद भुला हंसी भी, जहां बैठ करे ठिठोली, वहाँ कुछ और नहीं होती सिर्फ दोस्तों की टोली। ईर्ष्या, द्वेष, घमंड जहां, भूल से भी नहीं आ पाते, दोस्ती के बने हुए रिश्ते, यूँ ही अटूट नहीं कहलाते। कृष्ण सुदामा, कर्ण दुर्योधन का अमर हो गया रिश्ता, भूल कर अपना हित, साथ दिया संकट में दोस्त का। साथ जिसका होने से, गम का सागर भी दरिया लगे, रिश्तों के समंदर में, दोस्त ही है जो हमेशा साथ लगे। खुशियां संग में जिसके होने से, छू जातीं आसमान, दोस्ती की खूबसूरती की, देखो होती यही पहचान। सौरी या थैंक्यू का, जिसमें होता प्रवेश हमेशा वर्जित, गुलदस्ता ये वो है, जो दोस्ती के फूलों से है सुसज्जित। उम्र भी जहां ठहर, समय के पहिये को मुंह चिढ़ाती, दोस्तों बीच टांग खिंचाई में, वो अपने को भूल जाती। बिन स्वार्थ का कलयुग में रिश्ता, जैसे हो एक सपना, सच्चा दोस्त मिला जिसको, उसका पूरा हुआ सपना।

गोविन्द शर्मा

सेवानिवृत्त मुख्य कार्यालय अधीक्षक, सामान्य शाखा,
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, जयपुर

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर - एक परिचय विहंगावलोकन

कुलपति प्रो. संजीव शर्मा



राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (NIA) की स्थापना 7 फ़रवरी 1976 को एक स्वायत्त निकाय के रूप में हुई थी। यह संस्थान पूर्णतः आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित और नियंत्रित है। यह संस्थान चिकित्सालय, स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर एवं विद्यावारिधि हेतु अध्ययन और अध्यापन में भारतवर्ष में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्वभर में प्रसिद्ध है तथा आयुर्वेद चिकित्सा, शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुसंधान और उपचार के क्षेत्र में अद्वितीय प्रमुख संस्थान है। राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान को 9 नवंबर, 2020 को **मानद विश्वविद्यालय** का दर्जा प्राप्त हुआ तथा माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 13 नवंबर, 2020 इसे राष्ट्र को समर्पित किया गया। संस्थान का शासी निकाय आयुष मंत्री, भारत सरकार द्वारा संचालित होता है और इसके अंतर्गत एक कार्यकारी परिषद भी है, जिसके अध्यक्ष कुलपति हैं। इसे एन.ए.बी.एच. से मान्यता प्राप्त है। इस संस्थान के अधीन जयपुर स्थित पांच चिकित्सालय सक्रिय रूप से संचालित हैं।

1. राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान परिसर स्थित बृहत् चिकित्सालय, आमेर रोड
2. सेठ सूरजमल बंबईवाला चिकित्सालय, किशन पोल बाजार, जयपुर
3. सेटेलाइट चिकित्सालय, जवाहर नगर, जयपुर
4. आयुर्वेद चिकित्सालय, जमवारामगढ़, जयपुर
5. आयुर्वेद चिकित्सालय, सोडाला, जयपुर

संस्थान में विभिन्न समितियाँ यथा- वित्त समिति, वैज्ञानिक सलाहकार समिति, संस्थागत नैतिकता समिति, अनुसंधान समीक्षा बोर्ड, रोगी देखभाल समिति, आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन कक्ष, प्रशासनिक समिति आदि कार्यरत हैं। राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान को डी- नोवो श्रेणी के अंतर्गत मानद विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त है तथा यह राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद से 'ए' ग्रेड मान्यता प्राप्त संस्थान है। यह संगठन एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज, एसोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज का सदस्य है। संस्थान NCISM के MARBISM की रैंकिंग में पिछले 2 वर्षों से लगातार सर्वोच्च स्थान पर 'ए' ग्रेड श्रेणी सहित स्थापित है। इस संस्थान ने हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जी की पहल पर हुए देश के प्रकृति परीक्षण में संख्यात्मक दृष्टि से सर्वोच्च, स्नातकोत्तर महाविद्यालयों की श्रेणी में सर्वोच्च और स्ट्राइक रेट की दृष्टि से सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। इस संस्थान ने इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ यूनिवर्सिटीज की सदस्यता हेतु भी आवेदन किया है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

संस्थान में निम्नलिखित शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं:

- स्नातक (BAMS)
- स्नातकोत्तर (MD/MS)
- 6 अंतर-विषयक विज्ञान (M.Sc. in Inter-Disciplinary) में नवीन एमएससी पाठ्यक्रम पोस्ट-डॉक्टोरल (Ph.D)
- आयुर्वेद नर्सिंग डिप्लोमा (CDANP)
- एक वर्ष का पंचकर्म तकनीशियन कोर्स (One year Technician Course in Panchkarma)
- लघु अवधि के 12 से अधिक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (Short Term Certificate Courses)

विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश, शैक्षणिक एवं परीक्षा से संबंधित कार्य इस मानद विश्वविद्यालय के अंतर्गत ही होते हैं। सभी विभागों में आधुनिक शिक्षण सुविधाएँ, वातानुकूलित कक्षाएँ, संग्रहालय, आधुनिक एवं अद्यतन उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ आदि उपलब्ध हैं।

प्रत्येक यूजी, पीजी व पीएचडी पाठ्यक्रम में अजा, अजजा, अपिव के लिए सीटों का आरक्षण भारत सरकार की आरक्षण नीति के अनुसार उपलब्ध है तथा विदेशी छात्रों के लिए भी आरक्षण आयुष मंत्रालय के निर्देशानुसार दिया जाता है। यहाँ विभिन्न पाठ्यक्रमों में रूस, ईरान, तंज़ानिया, ईरान, सूरीनाम, थाईलैंड, मलेशिया, भूटान, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश, अफ़ग़ानिस्तान सहित 17 से अधिक देशों के लगभग 80 से भी अधिक विदेशी छात्र-छात्राएँ यहाँ अध्ययन कर रहे हैं।

संस्थान द्वारा 35 से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) किए गए हैं, जिनमें सरकारी, गैर-सरकारी एवं निजी संस्थान शामिल हैं।

चिकित्सालय

संस्थान का 280 बिस्तरों वाला अंतरंग और बहिरंग सुविधा युक्त चिकित्सालय है जो यह राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (एनएबीएच) से मान्यता प्राप्त है, जिसमें अतिरिक्त 20 बिस्तरों वाला पृथक चिकित्सालय है, जिसमें ओपीडी सेवाएँ, विशेष परीक्षण सेवाएँ (PPP मॉडल), कॉटेज वार्ड, डीलक्स वार्ड, रोगी परिवहन सुविधा तथा औषध भंडार सेवाएं शामिल हैं।

संस्थान चिकित्सालय में :-

- बहिरंग चिकित्सा विभाग- ओपीडी में प्रतिवर्ष 3 लाख से अधिक रोगी चिकित्सा परामर्श हेतु आते हैं।
- अंतरंग चिकित्सा विभाग - आईपीडी में लगभग 80 प्रतिशत बेड ओक्यूपेंसी रहती है।
- रोगियों और शोधकर्ताओं को निःशुल्क वितरण के लिए संस्थान की जीएपी प्रमाणित भेषजशाला प्रतिवर्ष 10 करोड़ से अधिक मूल्य की 300 से अधिक प्रकार की औषधियों का उत्पादन हो रहा है।
- लगभग सभी अंतरंग और बहिरंग रोगियों को संस्थान की रसायनशाला में बनाई गई औषधियों का ही वितरण किया जाता है।

संस्थान को मान्यताएँ और उपलब्धियाँ

संस्थान ने NAAC, GMP, NABH, ATAB, NABL, FSSAI, चिकित्सालय रसायनशाला को ISO जैसी अनेक मान्यताएँ प्राप्त की हैं। संस्थान ने NIRF के लिए आवेदन किया है तथा 20 पेटेंट का दावा पेश किया गया है। संस्थान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 12 से अधिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं तथा गर्व का विषय है कि राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान को अखिल भारतीय प्रधानमंत्री आयुष नवाचार पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

संस्थान को निम्नलिखित राष्ट्रीय एजेंसियों के नोडल केंद्र के रूप में नियुक्त किया गया है:

- राष्ट्रीय आयुर्वेद पांडुलिपि परियोजना के लिए नोडल एजेंसी

- रीजनल रॉ ड्रग रिपोजीटरी (पश्चिमी क्षेत्र)
- आयुर्वेद
- आयुष पर तकनीकी कार्यदल
- आरएनसीटीपी

आमजन की चिकित्सा एवं उपचार हेतु संस्थान के प्रमुख विभाग एवं इकाइयाँ

काय चिकित्सा विभाग	नेत्र परीक्षण
पंचकर्म विभाग	क्रिया कल्प इकाई
शरीर क्रिया और शरीर रचना विभाग	मधुमेह चिकित्सा इकाई
शल्य विभाग	निःशुल्क औषधि वितरण कक्ष इकाई
बालरोग विभाग	गुदरोग इकाई
दंत रोग विभाग	कैंसर चिकित्सा इकाई
शालाक्य विभाग-नाक, कान, गला रोग	मानसिक स्वास्थ्य इकाई
रोगनिदान एवं विकृति विभाग	अग्रिजन्य विकार इकाई (मेटाबोलिक डिस्ऑर्डर)
द्रव्यगुण विभाग	रेटिना इकाई
मौलिक सिद्धांत विभाग	सुप्रजा (प्री-नेटल) उपचार इकाई
स्वस्थवृत्त विभाग	पोषणाहार इकाई
प्रसूति एवं स्त्रीरोग विभाग	सौंदर्य इकाई
शल्य विभाग	जीवनशैली जन्म विकार इकाई अस्थि संधि रोग इकाई हृदय रोग इकाई मेदोरोग इकाई

विशेष विस्तार केंद्र, पंचकुला, हरियाणा

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान का एक विस्तार केंद्र पंचकुला (हरियाणा) में स्थापित किया जा रहा है। आयुर्वेद के क्षेत्र में यह एक बड़ी परियोजना है, जिसके लिए हरियाणा सरकार ने 20 एकड़ से अधिक भूमि उपलब्ध कराई है। इस विस्तार केंद्र की हमारे माननीय

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 12-02-2019 को इसकी आधारशिला रखी गई थी। यह केंद्र बहिरंग (OPD), अंतरंग (IPD), प्रयोगशाला, शोध, संविदा कर्मियों सहित लगभग 125 स्टाफ के साथ एक राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के रूप में विकसित किया जा रहा है।

अन्य विकास योजनाएं

संस्थान ने भारी उद्योग विभाग, भारत सरकार से शहर के प्रमुख स्थान पर अवस्थित 1.37 एकड़ भूमि प्राप्त की है, जो विभिन्न आयुर्वेदिक गतिविधियों के विस्तार हेतु उपयोग की जाएगी। राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर एक विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है, जहाँ 58,000 वर्गमीटर निर्मित क्षेत्र में 12 एकड़ भूमि पर 2 से 6 मंजिलें अकादमिक, प्रशिक्षण, अस्पताल, औषधालय, संग्रहालय, 458 छात्र-छात्राओं की क्षमताओं के आवासीय छात्रावास, अतिथि कक्ष, पुस्तकालय आदि भवन बने हुए हैं। इसके अलावा परिसर से बाहर भी 59 कार्टर उपलब्ध हैं। संस्थान परिसर में हाल ही में चिकित्सालय, पंचकर्म, रसायनशाला, पशु अनुसंधान विभाग (एनीमल हाउस), अतिथि कक्ष आदि निर्मित कराकर भवनों का विस्तार कराया गया है। प्रशिक्षण और भेषजीय उपयोगों के लिए 20 एकड़ भूमि पर विभिन्न प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों के लिए हर्बल गार्डन विकसित किया गया है। शोध सुविधाएँ, इनडोर और आउटडोर गेम्स के लिए खेल मैदान, जिम, 550 सीटों की क्षमता वाला वातानुकूलित प्रेक्षागृह (ऑडिटोरियम) उपलब्ध है। यह संस्थान अंतर्राष्ट्रीय मानकों के स्तर के अनुरूप तथा आयुर्वेदिक उपचारों के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है। राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर में शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक 329 नियमित अधिकारी और कर्मचारी पद स्वीकृत हैं तथा निविदा और ऑउटसोर्सिंग पर 400 कार्मिकों की भर्ती का अनुमोदन प्राप्त है। इनमें से 93 प्रतिशत पद भरे हुए हैं। यह संस्थान हमारे राष्ट्र का गौरव है।

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

रंग का अपना महत्व



डॉ. अरुणिमा गुप्ता

जीवन में हर रंग का अपना महत्व
हर दिन होली के पर्व समान
अनगिनत रंगों की इस दुनिया में
छोटी सी ज़िन्दगी को इंद्रधनुष मान

इस रंगीन दुनिया में,
माँ के दुग्ध का श्वेत रंग हो
गले में पहना वो पहले स्वर्ण आभूषण का संग हो
वो काले मोती कलाई पर सजे
वो चांदी की पायल दिन रात बजे

याद है वो काली स्लेट और सफेद चॉक
वो निक्कर और शायद पिंक वाली फ्रॉक
वो नीले आसमान में अगण्य तारे गिनना
वो छुप के बगीचे से रंग बिरंगे फूल चुनना

वो हरी पीली नीली गेंद से खेलना
वो आसमान को सुशोभित करते पतंगों के रंग
वो फूलों पर मँडराती रंगीन तितलियाँ
और वो हंसी ठिठोली के रंग

वो रंगोली के सुन्दर पलों के बीच
प्रतिपल उतार चढ़ाव देखे हैं

कभी कोई बदरंग सी विफलता में
सफल होने की खुशी के रंग भी देखे हैं

वो व्हाट्सअप की हरियाली हो
नीले फेसबुक का आसमान हो
जहाँ कई तारे और एक चाँद हो
उस चाँद के लिए दुनिया कुर्बान हो

यहीं से एक नये रंग की शुरुआत होती है
जब लाल गुलाब जीवन में आता है
किसी के आने से ज़िन्दगी महकती है
तब सभी रंगों का एहसास होता है

ऐसे ही आगे बढ़ते बढ़ते,
हर रंग का अनुभव होता है
अपने सारे कार्यों से निवृत्त होकर ही
जीवन में सुकून का रंग चढ़ता है
हर वर्ण का अपना महत्व है
खुशी से हर रंग को अपनाओ
जीवन के इस कोरे कागज़ पर
अनुभवों का इंद्रधनुष बनाओ

और इंद्रधनुष के प्रत्येक रंग से
अपना जीवन सजाओ
खुद भी महको पुष्प बनकर
कर्मस्थली भी महकाओ॥

स्त्रीरोग एवं प्रसूति विभाग
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

परवरिश

पूनम बत्रा



हर माँ बाप चाहते हैं कि उनका बच्चा दुनिया का सबसे आदर्शवादी बच्चा बने और इसके लिए माता-पिता बच्चों को जितनी हो सके, उतनी अच्छी परवरिश देने को कोशिश भी करते हैं। आज कल के हालात को देखते हुए 'परवरिश' को लेकर मन में सवाल उठता है कि हम जो परवरिश अपने बच्चों की कर रहे हैं क्या वह सही है क्योंकि हमारा यह समाज उसी मापदंड पर परवरिश को निर्धारित करके देखता है। बच्चों की सही परवरिश करना आज हर माँ बाप की सबसे बड़ी समस्या है। आज के बदलते परिवेश में बच्चे को सही शिक्षा, सही परवरिश कर उन्हें बड़ा करना हर माता-पिता के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनती जा रही है। बच्चों के साथ माँ बाप का रिश्ता दोस्ताना होना भी कुछ मर्यादा तक ही सीमित रहना चाहिए। यह नहीं की उसकी बात यदि आपने नहीं मानी तो वो आपसे यह कहने लगे कि मुझे आपसे नफरत है मेरी समझ में यह रिश्ता तो ऐसा होना चाहिए, जिसमें न तो उसको ऐसा महसूस हो कि आप अपने फैसले उस पर थोप रहे हैं और न ही ऐसा हो कि आपके द्वारा कही हुई कोई बात को वह एक कान से सुनकर दुसरे से निकाल दे। यह आपसी रिश्ता तो ऐसा होना चाहिए जिसमें अपनेपन की भावना के साथ-साथ बड़ों के लिए इज्जत भी सम्मिलित हो।

माता-पिता को बच्चों की परवरिश में बहुत धैर्य की जरूरत होती है। यदि बच्चा अपने जीवन में कामयाब है, आदर्शवादी है, तो आपकी परवरिश सबसे बेहतर है और यदि किसी भी कारण से आपके बच्चे से कोई गलत काम या भूल हो जाए जो कि नहीं होनी चाहिए थी तब

भी आप ही की परवरिश में दोष रहा होगा ऐसा माना जाता है।

- ★ घर के माहौल का भी बच्चों के दिलो-दिमाग व कार्य शैली पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। हर रोज घर-परिवार के झगड़े सुनकर व देखकर बच्चा भी वैसा ही सीखता इसलिए घर के बड़ों को चाहिए कि वे आपसी कलह से बचें। और बच्चों में भी अच्छे गुण आते हैं।
- ★ बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए माँ बाप के लिए सबसे बड़ी परेशानी यह है कि वे समझ ही नहीं पाते कि बच्चों के साथ किस तरह की सख्ती किस उम्र में करनी चाहिए। हमारे समाज में पारंपरिक रूप से एक कहावत प्रचलित रही है कि 'जब बाप का जूता बेटे के पाँव में आने लगे तो समझो कि यह बाप की बराबरी का हो गया है' यानी उसके साथ बहुत सख्ती नहीं बरतनी चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि वीणा के तार को इतना न ढीला छोड़ दो कि उससे आवाज ही न निकले या फिर उसे इतना न कस दो कि टूट ही जाए।

आज के समय में यह धारणा है कि कामकाजी महिलाएं बच्चों को ज्यादा समय नहीं दे पाती हैं और उनकी देखभाल नहीं हो पाती है। लेकिन समाजशास्त्रियों की राय इससे अलग है। वे मानते हैं कि आज के दौर में माँ का कामकाजी होना बच्चों की बेहतर परवरिश और अच्छी शिक्षा में मददगार साबित होता है। सेंटर फॉर सोशल रिसर्च में निदेशक रंजना कुमारी ने कहा कि

आजकल महिलाएँ एक ओर माँ की भूमिका निभाती है और दूसरी ओर ऑफिस भी संभालती है। महिलाओं के कामकाजी होने का फायदा निश्चित रूप से परिवार और बच्चों को ही मिलता है ऐसा नहीं है कि जो महिलाएँ काम करती है वे अपने बच्चों से प्यार नहीं करती बल्कि इससे बच्चा आत्मनिर्भर बनता है, क्योंकि वे उनके लिए ही तो काम करती है। बच्चों की अच्छी परवरिश के लिए कुछ टिप्स -

- ★ आजादी तो दें पर जिम्मेदार भी बनाएँ
- ★ बच्चों के साथ दोस्ताना संबंध रखते हुए उसे प्यार से समझाइए तो उसकी आदतों में जरूर सुधार आएगा।
- ★ उनके दोस्तों की आदतों के बारे में उनसे खुलकर बात करें।
- ★ आपकी नजर हमेशा उनके कार्यकलापों पर होनी चाहिए। अनावश्यक टोका-टाकी न करें।
- ★ बढ़ते बच्चों को पारिवारिक बातों का हिस्सा जरूर बनाएँ।
- ★ बच्चों को विश्वास में लेकर उनके कहीं भी आने-जाने की जानकारी रखें।

अंत में सब उपरोक्त बातों का सार यही है कि परिवार की नैय्या माँ बाप के हाथ में है। अनुशासन व संस्कार की पतवार से वे इस नैय्या को मझदार से पार कर सकते हैं। माँ-बाप को चाहिए कि वे अपने बच्चों को ऐसी परवरिश दें कि वह एक शिक्षित, संस्कारी व सभ्य नागरिक बनें तथा अपने परिवार व देश का नाम रोशन करें।

कंप्यूटर प्रचालक
नमक आयुक्त कार्यालय जयपुर

कुछ अलग कर जाओ तुम



अंकिता कानोडिया

दबी रह जाती हैं वो नन्ही किलकारियाँ,
बस उन किलकारियों की आवाज बन जाओ तुम
टूट जाती हैं वो बुढ़ापे की उम्मीदें,
बस उन उम्मीदों का सहारा बन जाओ तुम
बढ़ते ही जा रहे है द्रौपदी के चीर हरण,
बस उस द्रौपदी के कृष्ण बन जाओ तुम
भूखे पेट सोने को मजबूर हैं लोग,
बस उन लोगों के दो वक्त्त की रोटी बन जाओ तुम
गुम होती जा रही है इस दुनिया से इंसानियत,
बस उस इंसानियत की छोटी सी मिसाल बन जाओ तुम
कुछ....अलग कर जाओ तुम
कुछ तो....अलग कर जाओ तुम

वरिष्ठ तकनीकी सहायक
केंद्रीय भूमि जल बोर्ड
पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर





दिनांक 10.10.2025 को
आयोजित नगर राजभाषा
कार्यान्वयन समिति की बैठक में
वार्षिक हिंदी नराकास पत्रिका
← दर्पण के 7 वें अंक का
विमोचन करते हुए
श्री अमिताभ,
महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, नराकास
एवं अन्य अधिकारीगण।

दिनांक 14.05.2025 को मुख्यालय,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति, →
जयपुर की बैठक का दृश्य।



← क्षेत्रीय स्तर पर दि. 05.08.2025
को वाक् प्रतियोगिता का
आयोजन।



दिनांक 10.10.2025 को आयोजित
नराकास बैठक में
विजेता सदस्य कार्यालय को
नगर राजभाषा शील्ड
प्रदान करते हुए
अपर महाप्रबंधक
एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी।

प्रधान कार्यालय , उ.प.रे., जयपुर में
राजभाषा पखवाड़ा-2025 के दौरान
पुरस्कार वितरण समारोह में
पुरस्कार प्रदान करते हुए
महाप्रबंधक, श्री अमिताभ।



दिनांक 10.10.2025 को
प्रधान कार्यालय, उ.प.रे., जयपुर में
राजभाषा पखवाड़ा पुरस्कार
वितरण समारोह के दौरान
हास्य कवि श्री पी.के. मस्त
हास्य-व्यंग्य कविताओं से
सभी का मनोरंजन करते हुए।





← केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1 में
हिंदी पखवाड़ा का आयोजन।

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1 में
हिंदी पखवाड़ा का आयोजन। →



← केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-3 में
हिंदी पखवाड़ा का आयोजन।

हिंदी पखवाड़ा 2025 के अवसर पर आयोजित
विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को
पुरस्कृत करते हुए ग्रुप कैप्टन विनय भारद्वाज,
स्टेशन कमांडर, वायु सेना स्टेशन, जयपुर। →





← केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर द्वारा त्रि-स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन।

श्री जी. किशन रेड्डी,
माननीय केंद्रीय कोयला और खान मंत्री,
आरआईसी, जयपुर में
अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का उद्घाटन करते हुए। →



← केंद्रीय संचार ब्यूरो, जयपुर द्वारा दिनांक 13,14 अगस्त, 2025 विभाजन की विभीषिका स्मृति दिवस के अवसर पर जयपुर जंक्शन रेलवे स्टेशन पर दो दिवसीय चित्र का आयोजन किया गया। पत्र सूचना कार्यालय एवं केंद्रीय संचार ब्यूरो, जयपुर अपर महानिदेशक, श्रीमती ऋतु शुक्ला एवं जयपुर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री रवि जैन प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए।

केंद्रीय संचार ब्यूरो, जयपुर और भारतीय वायु सेना स्टेशन, जयपुर द्वारा 13 अगस्त, 2025 हर घर तिरंगा के तहत ऐतिहासिक स्थल जलमहल से आमेर फोर्ट तक तिरंगा बाईक रैली निकाली गई।
→ पत्र सूचना कार्यालय एवं केंद्रीय संचार ब्यूरो, जयपुर अपर महानिदेशक, श्रीमती ऋतु शुक्ला एवं भारतीय वायु सेना स्टेशन, जयपुर के कमांडर ग्रुप केप्टन श्री विनय भारद्वाज ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।





जनगणना कार्य निदेशालय, जयपुर की कुछ झलकियां

हिंदी पखवाड़ा-2025 पर विजेताओं को
सम्मानित करते हुए
निदेशक, श्री बिष्णु चरण मल्लिक।

जनगणना कार्य निदेशालय द्वारा
हिंदी पखवाड़ा 2025 समापन का दृश्य।



हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह
में संबोधित करते हुए
निदेशक, श्री बिष्णु चरण मल्लिक।

जनगणना प्री टेस्ट-2027 प्रशिक्षण का दृश्य।



जयपुर में भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण कार्यालय, राज्य इकाई के गौरवशाली 175 वर्षों की भूवैज्ञानिक उत्कृष्टता पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार की झलकियां।



↑ सभा को संबोधित करते हुए श्री जी. किशनरेड्डी, माननीय केंद्रीय कोयला एवं खानमंत्री।



↑ अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में सम्बोधित करते हुए श्री पीयूष गोयल, सचिव, खान मंत्रालय।



↑ माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन करते हुए श्री विजय विष्णुपंत मुगल, अपर महानिदेशक एवं विभागाध्यक्ष।



↑ श्री विजय विष्णुपंत मुगल, अपर महानिदेशक एवं विभागाध्यक्ष को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए श्री एल.एम.एस. मौरा, उप महानिदेशक।



↑ दीप प्रज्वलन करते हुए श्री विजय विष्णुपंत मुगल, अपर महानिदेशक एवं विभागाध्यक्ष।



↑ दीप प्रज्वलन करती हुई श्रीमती अर्चना शर्मा, निदेशक एवं राजभाषा अधिकारी, राज्य इकाई : राजस्थान, जयपुर।



हिंदी पखवाड़ा के दौरान
चंबल मंडल कार्यालय जयपुर द्वारा
हिन्दी निबंध में प्रतियोगिता का आयोजन।

समापन समारोह में श्री हरेन्द्र सिंह,
अधिशाली अभियंता पुरस्कार प्रदान करते हुए।



राजभाषा सप्ताह के दौरान
रेल दावा अधिकरण, जयपुर में
राजभाषा की शपथ लेते हुए कर्मचारिण।

रेल दावा अधिकरण, जयपुर में
राजभाषा सप्ताह-2025 में
पुरस्कार वितरण समारोह।





← राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में
कौशलम् प्रशिक्षण का व्याख्यान देते हुए
कुलपति प्रो. संजीव शर्मा।

नमक आयुक्त कार्यालय, जयपुर में
राजभाषा हिंदी पखवाड़ा का आयोजन। →



← दिनांक 5 जून 2025 को
नमक आयुक्त कार्यालय, जयपुर में
वृक्षारोपण-पर्यावरण दिवस पर
वृक्षारोपण का दृश्य।

दिनांक 16 जून 2025 को
नमक आयुक्त कार्यालय, जयपुर में →
रक्तदान शिविर का आयोजन।



स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की प्रगति का सारांश

डॉ. कौशल गुप्ता



राजस्थान के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण क्षेत्रीय कार्यालय (Regional Office for Health Family Welfare - ROHFW), जयपुर का प्रमुख उद्देश्य केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच समन्वय स्थापित करना है, ताकि राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) और अन्य केंद्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा सके।

वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कौशल गुप्ता के नेतृत्व में यह कार्यालय राज्यभर में विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की गहन निगरानी, मूल्यांकन और पर्यवेक्षण का दायित्व निभा रहा है।

मुख्य कार्य एवं गतिविधियाँ

1. राष्ट्रीय कार्यक्रमों की निगरानी एवं मूल्यांकन

कार्यालय निम्नलिखित प्रमुख राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की निगरानी करता

- NVBDCP: राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम
- NCD : गैर-संक्रामक रोग नियंत्रण कार्यक्रम
- NLEP: राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम
- Trauma Care Programme
- RMNCH+A: प्रजनन, मातृ, नवजात शिशु एवं किशोर स्वास्थ्य
- IDSP : रोग निगरानी कार्यक्रम

2. गुणवत्ता आश्वासन एवं प्रशिक्षण

- मलेरिया माइक्रोस्कोपी प्रशिक्षण (Malaria Microscopy Trainings) का आयोजन
- एनवीबीडीसीपी के अंतर्गत कार्यरत प्रयोगशालाओं की क्रॉस चेकिंग द्वारा गुणवत्ता सुनिश्चित करना

3. डेटा विश्लेषण एवं फीडबैक

- विभिन्न रोगों से संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण
- राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय अधिकारियों (NPO, SPO) को समय पर आवश्यक फीडबैक प्रदान करना

4. स्वास्थ्य सूचना प्रणाली का सुदृढीकरण

- स्वास्थ्य सूचना क्षेत्र इकाई (HIFU) के माध्यम से डेटा संचालित निर्णय प्रणाली को सुदृढ बनाना

5. प्रशासनिक एवं वित्तीय प्रबंधन

- कर्मचारियों के वेतन बजट नियंत्रण और न्यायालयीन प्रकरणों का कुशल निपटान

प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण

कार्यालय स्वास्थ्य कर्मियों और अधिकारियों के लिए नियमित क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करता है। इन कार्यक्रमों में स्वास्थ्य डेटा रिकॉर्डिंग और प्रबंधन के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर प्रशिक्षण दिया जाता है, जैसे:

- ICD-10 एवं ICD-11: रोगों का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण

- ICF : कार्यप्रणाली, विकलांगता एवं स्वास्थ्य का वर्गीकरण
- MRO एवं HIMS: मेडिकल रिकॉर्ड्स एवं हॉस्पिटल सूचना प्रबंधन प्रणाली

विमानपत्तन स्वास्थ्य संगठन (APHO), जयपुर का प्रशासन

यह कार्यालय जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे स्थित विमानपत्तन स्वास्थ्य संगठन (APHO) का प्रशासन भी देखता है। इसके अंतर्गत प्रमुख गतिविधियाँ हैं:

- हवाई अड्डे पर खाद्य सुरक्षा मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करना

- वेक्टर निगरानी एवं नियंत्रण गतिविधियाँ चलाना
- यात्रियों के माध्यम से संक्रामक रोगों के प्रसार की रोकथाम

निष्कर्ष

संक्षेप में, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर राजस्थान में केंद्रीय स्वास्थ्य योजनाओं की सफलता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने में एक प्रमुख कड़ी के रूप में कार्य कर रहा है। यह कार्यालय राष्ट्रीय स्तर पर स्वस्थ भारत सशक्त भारत के लक्ष्य को साकार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

राह संघर्ष की

बी.एन.जाजोरिया



पंख नहीं हैं, तो हौसलों को उड़ान दे, साँस है बाकी, तो एक नई जान दे।
 जिंदगी ठहरी नहीं, गति ही पहचान है, गिर के उठने का नाम ही तो इम्तिहान है।
 मत देख भीड़ को, जो तुझ पर हँस रही, तेरी मंज़िल तो सिर्फ़ तुझमें बस रही।
 रास्ते हज़ार हैं, पर चुनना है एक को, नज़रें गड़ा ले अब, अपने हर विवेक को।
 माना कि राह में, पत्थर भी नुकीले हैं, कुछ ख़्वाब टूटे हैं, कुछ घाव भी गीले हैं।
 पर कौन कहता है, मोती बिना दर्द मिलते? अंधेरी रात में ही, जुगनू सदा चमकते।
 उठ, बाँध हिम्मत का धागा, अब कमर कस, शून्य से शिखर तक, तूफ़ानों से निकल बस।
 अग्निपरीक्षा में जो तपकर निकलता है, वो लोहा ही इतिहास फिर से गढ़ता है।
 डर को तू रख दे कहीं, हिम्मत को आजमा, हारना मना है, बस आगे तू बढ़ता जा।
 जब तक न छू ले शिखर, तब तक न रुकना है, तेरी जीत निश्चित है, बस अब नहीं झुकना है!

पी.जी.टी. हिन्दी

भारत का संविधान लिखने वाली महिलाएं : एक अनकही गौरव गाथा

निशिकांत अग्रवाल



भारत की आज़ादी के अठत्तर वर्ष और संविधान लागू होने के पचहतर वर्ष व्यतीत हो जाने के उपरांत भी, हमारे इतिहास और लोकप्रिय आख्यानो में सिर्फ पुरुषों को ही हमारे संविधान के निर्माता के रूप में पेश किया गया है। हालाँकि, 299 सदस्यों वाली संविधान सभा में 15 महिलाएँ थीं जो अलग-अलग पृष्ठभूमि से आई थीं और जिन्होंने पितृसत्ता, अस्पृश्यता, जाति आधारित उत्पीड़न, बाल विवाह और विधवापन को सहा था।

इन कटु अनुभवों ने आरक्षण, अल्पसंख्यक अधिकार और विधायी वित्त जैसे विषयों पर उनकी चर्चाओं, तर्कों और स्थितियों को सूचित किया। हिंदू कोड बिल पर बहस के दौरान, दुर्गाबाई देशमुख और हंसा कुमारी जैसे सदस्यों ने समान नागरिक संहिता के लिए मजबूत तर्क दिए, जिसके बारे में उनका मानना था कि इससे महिलाओं के लिए अधिक समानता सुनिश्चित होगी।

ग्रेनविले ऑस्टिन द्वारा भारतीय संविधान को 'राष्ट्र की आधारशिला' के रूप में वर्णित करना आज भी प्रासंगिक है। इसने न केवल शासन के लिए एक मजबूत ढांचा प्रदान किया है, बल्कि राष्ट्र को आधार देने वाले नैतिक मूल्यों को भी आकार दिया है।

ग्रेनविले ऑस्टिन के शब्दों में, भारतीय संविधान सबसे पहले एक सामाजिक दस्तावेज है। संविधान इस मायने में भी सामाजिक दस्तावेज़ है क्योंकि इसने विविध धर्मों, समुदायों, भाषाओं, जातियों के साथ साथ क्षेत्रगत विविधताओं के बावजूद एकजुटता का संदेश पूरी मानवता को दिया। बिना महिला प्रतिनिधित्व के संविधान निर्माण की प्रक्रिया सदैव अधूरी रहती और संदेह व प्रश्नों के घेरे में भी, कैसे कोई संविधान अपनी आधी आबादी के प्रतिनिधित्व के बिना बनता और अपनी श्रेष्ठता का दंभ भरता?

भारतीय संविधान न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों का प्रतीक है। यह दुनिया के

सबसे गतिशील और विकसित संविधानों में से एक है। भारतीय संविधान ने 75 वर्षों तक सांस्कृतिक विविधता और विशाल देश को एक साथ रखने में सफलता हासिल की है।

दुनिया भारतीय संविधान के स्थायित्व, लचीलेपन और प्रभावकारिता पर आश्चर्य करती है। इस ऐतिहासिक दिवस पर संविधान सभा की 299 महिला सदस्यों को हमें याद करना चाहिए, मान्यता देनी चाहिए और श्रद्धांजलि देनी चाहिए, जिन्होंने 2 साल 11 महीने और 17 दिन तक दुनिया के सबसे प्रगतिशील संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए अथक प्रयास किया। लोकप्रिय कथाओं ने हमें विश्वास दिलाया है कि केवल पुरुष ही भारतीय संविधान के निर्माता थे। एक राष्ट्र के रूप में, हम निश्चित रूप से संविधान सभा की 15 असाधारण महिला सदस्यों द्वारा किए गए उल्लेखनीय योगदान के बारे में भूल गए हैं। महिलाएं विभिन्न पृष्ठभूमि की थीं और भारतीय संविधान को आकार देने के लिए कई लड़ाईयाँ लड़ी थीं। हालांकि, इनमें से कोई भी महिला संविधान सभा की प्रारूप समिति का हिस्सा नहीं थी।

संविधान सभा की महिला सदस्यों में अम्मू स्वामीनाथन, दाक्षायनी वेलायुधन, बेगम ऐजाज़ रसूल, दुर्गाबाई देशमुख, हंसा मेहता, कमला चौधरी, लीला रॉय, मालती चौधरी, पूर्णिमा बनर्जी, राजकुमारी अमृत कौर, रेणुका रे, सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, विजया लक्ष्मी पंडित और एनी मैस्करिन थीं। वे वकील, सुधारवादी या स्वतंत्रता सेनानी थीं और उनमें से अधिकांश नारीवादी आंदोलन का हिस्सा थीं। सभा की महिला सदस्यों में अधिकांश महिलाएं उच्च जाति और उच्च वर्ग से थीं और साक्षर थीं। 15 महिलाओं में से केवल एक मुस्लिम और दूसरी दलित थी। तत्कालीन संयुक्त प्रांत ने चार महिलाओं को संविधान सभा में भेजा, जो महिलाओं की सबसे अधिक संख्या थी।

जी दुर्गाबाई (मद्रास) बेगम ऐजाज़ रसूल (संयुक्त प्रांत) और रेणुका रे (पश्चिम बंगाल) ने संविधानसभा की बहसों में

सबसे अधिक बात की। आरक्षण से लेकर समान नागरिक संहिता तक के मुद्दों पर चर्चा और बहस में सभा की महिला सदस्यों का उत्साह और योगदान अद्वितीय था। लिंग समानता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, विकेंद्रीकरण और सामाजिक न्याय जैसे कई मुद्दों पर उनके योगदान का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

संविधान सभा की महिला नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान

अम्मू स्वामीनाथन : जिन्हें प्यार से अम्मुकुट्टी कहा जाता था, एक साहसी सामाजिक कार्यकर्ता और राजनीतिक नेता थीं। अपने काम के माध्यम से वह विचार और कार्य में निडर थीं, जो एक सामाजिक कार्यकर्ता और राजनेता के रूप में उनके जीवनकाल में स्पष्ट था। उन्होंने महिला भारत संघ (डब्ल्यूआईए) की स्थापना की दिशा में काम किया वह महिलाओं के अधिकारों की प्रबल समर्थक थीं और उन्होंने उत्तराधिकार, विरासत और विवाह से संबंधित कानूनों में सुधार का आह्वान किया। वह 1946 में सभा के लिए चुनी गईं और मौलिक अधिकारों और राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों पर बहस में योगदान दिया।

एनी मस्करीन : मस्करीन ने संविधानसभा में त्रावणकोर रियासत और कोचीन संघ का प्रतिनिधित्व किया। वह एक वकील थी तथा स्वतंत्रता और रियासतों के एकीकरण के लिए आंदोलनों की एक प्रमुख नेता थीं। उन्होंने संघवाद पर बहस में प्रमुख रूप से योगदान दिया।

दक्षायणी वेलायुधन : वेलायुधन संविधान सभा के लिए चुनी जाने वाली सबसे कम उम्र की और एकमात्र दलित महिला थीं। 34 साल की उम्र में, वह संविधान सभा की सबसे कम उम्र की सदस्यों में से एक थीं। संविधान सभा में, उन्होंने अस्पृश्यता का जोरदार विरोध किया और शासन संरचना में सत्ता के विकेंद्रीकरण के मूल सिद्धांत के समर्थन में अपनी आवाज उठाई।

बेगम ऐजाज़ रसूल : बेगम संविधान सभा की एकमात्र मुस्लिम महिला सदस्य थीं। वर्ष 1937 में, उन्होंने उत्तर प्रदेश विधान परिषद में एक गैर-आरक्षित सीट से अपना पहला चुनाव जीता। वह अल्पसंख्यक आरक्षण के विरोध में दृढ़ता से खड़ी रहीं। उन्होंने हाशिए पर पड़े लोगों की आवाज़ बनकर उनके उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

दुर्गाबाई देशमुख : दुर्गाबाई देशमुख एक प्रमुख वकील, स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक व राजनेता थीं, जिन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिला सत्याग्रहियों को संगठित करने में बड़ी भूमिका निभाई। 1930 से 1933 के बीच उन्हें तीन बार जेल जाना पड़ा। अपने पूरे जीवन में, उन्होंने महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा दिया। उन्होंने भारत में अलग परिवार न्यायालय स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

हंसा जीवराज मेहता : मेहता एक सामाजिक कार्यकर्ता और नारीवादी थीं। वह देश सेविका दल की संस्थापक थीं। उन्होंने संविधान सभा में कार्य किया और मौलिक अधिकार उप-समिति सहित कई समितियों की सदस्य थीं। वह एक सुधारवादी और महिलाओं के अधिकारों की प्रबल समर्थक थीं। वह 1946 में एक साल के लिए अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (ए.आई.डब्ल्यू.सी.) की अध्यक्ष थीं, जहाँ उन्होंने महिला अधिकारों और कर्तव्यों के लिए एक चार्टर का प्रस्ताव रखा। 15 अगस्त 1947 को, आधी रात के कुछ मिनट बाद, उन्होंने संविधान सभा में राष्ट्रीय ध्वज प्रस्तुत किया, जो स्वतंत्र भारत के ऊपर से उड़ने वाला पहला ध्वज था।

कमला चौधरी : कमला चौधरी एक हिंदी कहानी लेखिका थीं। उन्होंने 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और कई बार गिरफ्तार की गईं। उन्होंने गाँवों और पिछड़े क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित किया। भारतीय संविधान को अपनाने के बाद, उन्होंने 1952 तक भारत की प्रांतीय सरकार के सदस्य के रूप में कार्य किया।

लीला रॉय : लीला रॉय एक स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक कार्यकर्ता थीं। वह दिसंबर 1946 में सभा के लिए बंगाल से एकमात्र निर्वाचित महिला सदस्य थीं। हालाँकि, उन्होंने भारत के विभाजन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने के लिए अपने पद से इस्तीफा दे दिया और शरणार्थियों की राहत और पुनर्वास के लिए खुद को समर्पित कर दिया।

मालती चौधरी : मालती चौधरी उड़ीसा से संविधान सभा के लिए चुनी गईं। वह उत्कल प्रदेश कांग्रेस समिति

की अध्यक्ष थीं और उन्होंने शिक्षा, विशेष रूप से वयस्क शिक्षा की भूमिका पर जोर देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कई बार जेल भी गई।

पूर्णिमा बनर्जी : बनर्जी स्वतंत्रता आंदोलन में एक प्रमुख नेता थीं और व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्तित्व थीं। वह इलाहाबाद में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस समिति की सचिव थीं। उन्होंने 1946 से 1950 तक संयुक्त प्रांतों का प्रतिनिधित्व करते हुए संविधान सभा में कार्य किया और 1946 में उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्य थीं। उन्होंने किसानों और ट्रेड यूनियनों के साथ सक्रिय रूप से काम किया और स्वतंत्रता संग्राम में उनका साथ दिया। 24 जनवरी 1950 को आधिकारिक तौर पर राष्ट्रगान के रूप में अपनाए जाने के बाद, उन्होंने 'जन गण मन' पर हस्ताक्षर करने के लिए प्रसिद्ध रूप से कोरस का नेतृत्व किया।

राजकुमारी अमृत कौर : अमृत कौर संयुक्त प्रांत से संविधान सभा के लिए चुनी गईं। उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ कई विरोध और जुलूस आयोजित किए। वह 20 महीने तक जेल में रही। महिलाओं के सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों की उन्नति में उनका योगदान उल्लेखनीय है। वे स्वतंत्र भारत की पहली स्वास्थ्य मंत्री बनीं।

रेणुका रे : रेणुका रे को पश्चिम बंगाल से संविधान सभा के लिए चुना गया था। उन्होंने अल्पसंख्यकों, महिलाओं के अधिकारों और द्विसदनीय विधायिका के अधिकारों सहित संविधान सभा में कई हस्तक्षेप किए। वह एआईडब्ल्यूसी में शामिल हुईं और माता-पिता की संपत्ति में महिलाओं के अधिकारों और विरासत अधिकारों की उन्नति के लिए अभियान चलाया।

सरोजिनी नायडू : सरोजिनी नायडू एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता और कवयित्री थीं। नायडू की कविता में बच्चों की कविताएं, देशभक्ति और त्रासदी शामिल हैं। 1925 में, वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनीं और कई महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। 1947 में, उन्हें संयुक्त प्रांत का गवर्नर

नियुक्त किया गया और वे इस पद पर आजीवन कार्य करती रहीं।

सुचेता कृपलानी : सुचेता कृपलानी ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने 1940 में कांग्रेस पार्टी की महिला विंग की स्थापना की। 1946 में, वह संयुक्त प्रांत से संविधान सभा के लिए चुनी गईं। संविधान सभा के स्वतंत्रता सत्र के दौरान कृपलानी ने वंदे मातरम गाया। वह भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं।

विजया लक्ष्मी पंडित : विजया लक्ष्मी पंडित एक अग्रणी नीति निर्माता, कार्यकर्ता, मंत्री, राजदूत और राजनायिका थी, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका में क्रांतिकारी बदलाव किया। 1937 में, वह पहली महिला भारतीय कैबिनेट मंत्री बनीं और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह संविधान बनाने के लिए भारतीय संविधान सभा का आह्वान करने वाली पहली नेताओं में से एक थीं। 1953 में, वह संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष बनीं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि संविधान सभा की सदस्य इन पंद्रह महिलाओं में अद्भुत प्रतिभा, असाधारण बौद्धिक क्षमता एवं राष्ट्र-निर्माण के प्रति अदम्य भावना थी। उन्होंने संविधान सभा में जनसरोकारों से जुड़े हर विषय, उप-विषय से संबंधित बहस में सक्रिय रूप से भाग लेकर और अपने विचारों के साथ-साथ समाज के विभिन्न हिस्सों और समूहों के विचारों का शानदार प्रतिनिधित्व किया। समाज के वंचित वर्गों की बुलंद और सशक्त आवाज बनने के लिए किसी भी महिला में तात्कालिक सामाजिक मानदंडों और पुरानी प्रथाओं से लड़ने के लिए जितना साहस ज़रूरी था, उन सब में वो पर्याप्त साहसी थी।

उनके भागीरथ प्रयासों को सामान्यतः इतिहास लेखन, पाठ्यपुस्तकों एवं बुद्धिजीवियों के विमर्श में वो स्थान नहीं मिला, जिसकी वो हकदार थीं।

उनके प्रयासों की वृहद् स्वीकार्यता से चुनावी राजनीति, निर्णय लेने, नीति निर्माण आदि शासन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की अधिक भागीदारी को प्रोत्साहन मिलेगा।

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 3, जयपुर

संस्कृत भाषा का हिन्दी के विकास में योगदान

जितेन्द्र कुमार चौहान



संस्कृत भाषा, जिसे भारतीय संस्कृति की आत्मा और सभी भारतीय भाषाओं की जननी माना जाता है, का हिंदी भाषा के विकास और स्वरूप पर इतना गहरा और व्यापक प्रभाव रहा है कि इन दोनों भाषाओं को अलग करके देखना संभव नहीं है। संस्कृत ने न केवल हिंदी की शब्दावली और व्याकरण को आधार दिया है, बल्कि इसे एक समृद्ध साहित्यिक और दार्शनिक विरासत भी प्रदान की है। हिंदी का वर्तमान स्वरूप संस्कृत के दीर्घकालिक योगदान का ही परिणाम है।

1. हिंदी की मूल आधारशिला: व्याकरण और ध्वनिविज्ञान

संस्कृत ने हिंदी के लिए वह मजबूत आधार तैयार किया जिस पर इसकी पूरी संरचना टिकी हुई है।

- ध्वनिविज्ञान हिंदी की वर्णमाला (स्वर और व्यंजन) का क्रम, उच्चारण स्थान और वर्गीकरण सीधे तौर पर संस्कृत से लिया गया है। हिंदी की वैज्ञानिक और व्यवस्थित ध्वनि संरचना का मूल आधार संस्कृत का ध्वनिविज्ञान ही है।
- व्याकरणिक संरचना: हिंदी की अधिकांश व्याकरणिक श्रेणियाँ, जैसे लिंग (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग), वचन (एकवचन, बहुवचन) और काल संरचना, संस्कृत व्याकरण से प्रेरित हैं। संज्ञा, सर्वनाम और विशेषणों के निर्माण तथा वाक्यों की पदक्रम प्रणाली में भी संस्कृत का गहरा प्रभाव है।

2. शब्दावली का भंडार: तत्सम और तद्भव

संस्कृत हिंदी की शब्दावली का सबसे बड़ा और

सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। हिंदी के पास आज जो विशाल शब्द भंडार है, वह मुख्य रूप से संस्कृत की देन है:

- **तत्सम शब्द:** वे शब्द जो संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन के सीधे हिंदी में आ गए हैं (जैसे: अग्नि, जल, वायु, विद्या, धर्म)। ये शब्द हिंदी की औपचारिक, साहित्यिक और तकनीकी भाषा का आधार बनाते हैं।
- **तद्भव शब्द:** वे शब्द जो संस्कृत से होकर प्राकृत और अपभ्रंश जैसी मध्यकालीन भाषाओं से गुजरते हुए हिंदी में आए और उनका स्वरूप बदल गया (जैसे: कर्म - काम; दुग्ध - दूध; हस्त - हाथ)।
- **नवनिर्माण की क्षमता:** संस्कृत की उपसर्ग और प्रत्यय प्रणाली ने हिंदी को नए शब्दों के निर्माण की अपार क्षमता दी है। हिंदी आज भी नए वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों का निर्माण संस्कृत के धातुओं और शब्दांशों का उपयोग करके करती है (जैसे: दूरदर्शन, संगणक, अंतरिक्ष)।

3. साहित्यिक और दार्शनिक विरासत

संस्कृत ने हिंदी को केवल शब्द ही नहीं दिए, बल्कि इसे एक समृद्ध साहित्यिक और दार्शनिक पृष्ठभूमि भी प्रदान की है:

- **काव्यशास्त्र:** हिंदी का संपूर्ण काव्यशास्त्र (रस, अलंकार, छंद, गुण) संस्कृत के आचार्यों (भरत मुनि, विश्वनाथ) द्वारा स्थापित सिद्धांतों पर आधारित है।



जे.पी. मोर्य

फूल, कलियां और पत्तियां

- **भक्ति साहित्य:** हिंदी भक्ति काल के कवियों (तुलसीदास, सूरदास) ने अपनी रचनाओं में भले ही अवधी और ब्रजभाषा का प्रयोग किया, लेकिन उनकी विषय-वस्तु, दार्शनिक आधार और कई शब्दावली संस्कृत के पुराणों और उपनिषदों से ली गई है।
- **गद्य का विकास:** आधुनिक काल में, जब हिंदी गद्य का विकास हुआ, तब राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' और भारतेन्दु हरिश्चंद्र जैसे लेखकों ने हिंदी को संस्कृतनिष्ठ बनाकर इसे गंभीर विषयों को व्यक्त करने योग्य बनाया।

4. हिंदी की शैलियों पर प्रभाव

संस्कृत ने हिंदी की विभिन्न शैलियों को आकार दिया है:

- **उच्चारण और शिष्टता:** संस्कृत के प्रभाव से ही हिंदी में तत्सम शब्दों का उच्चारण शुद्ध और परिष्कृत माना जाता है, जो इसे एक गरिमापूर्ण भाषा बनाता है।
- **वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन:** हिंदी को विज्ञान, कानून और प्रशासन की भाषा बनाने में संस्कृत की शब्दावली ने निर्णायक भूमिका निभाई है। हिंदी की प्रशासनिक और तकनीकी शब्दावली का अधिकांश भाग संस्कृत मूल का है।

संस्कृत केवल हिंदी की 'जननी' ही नहीं, बल्कि इसकी 'संरक्षिका' भी है। संस्कृत ने हिंदी को व्याकरण की दृढ़ता, शब्दावली की विपुलता और साहित्यिक व दार्शनिक विचारों की गहराई प्रदान की है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यदि संस्कृत न होती, तो हिंदी का आज का परिष्कृत, समर्थ और समृद्ध स्वरूप संभव नहीं होता। आज भी हिंदी की शक्ति, वैज्ञानिकता और रचनात्मक क्षमता का रहस्य संस्कृत के अटूट संबंध में निहित है।

टी.जी.टी.- संस्कृत

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.3, जयपुर

ये फूल, कलियां व पत्तियां,
हैं जीवन का आधार,

है तेरे रूप कितने,
तेरे है रंग हजार।

न हो तो क्या हो,
कैसे बने सुगंध,

कैसे हो पूजा,
कैसे हो श्रद्धांजलि,

कैसे हो शृंगार,
कैसे बने आहार।

है परागण का माध्यम,
है जन्म का आधार,

ए जन्म की जननी,
तेरा अंत न हो कभी।

है जीवन का मूल यही,
है जीविका का आधार,

हैं इनके कितने लाभ,
रखे भविष्य का ख्याल

करे प्रकट आभार,
हे प्रकृति तुझे प्रणाम, तुझे प्रणाम।

लेखाकार, मिलेट्स विकास निदेशालय,
जयपुर

सोशल मीडिया का विवेकपूर्ण उपयोग : डिजिटल युग में संतुलन की कला

दीपक भारद्वाज



सोशल मीडिया आज हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। एक ओर यह हमें दुनिया से जोड़ता है, ज्ञान का विस्तार करता है और व्यापार के नए द्वार खोलता है, वहीं दूसरी ओर इसका अंधाधुंध और अविवेकपूर्ण उपयोग चिंताजनक है। 'विवेकपूर्ण उपयोग' का अर्थ है-इस शक्तिशाली उपकरण का समझदारी, संयम और सकारात्मक उद्देश्य के साथ इस्तेमाल करना, ताकि हम इसके लाभ उठा सकें और इसके नकारात्मक प्रभावों से बच सकें। यह एक ऐसी कला है जिसे हर डिजिटल नागरिक को सीखना आवश्यक है। विवेकपूर्ण उपयोग क्यों आवश्यक है?

सोशल मीडिया का अविवेकपूर्ण उपयोग कई गंभीर चुनौतियों को जन्म देता है:

- **मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:** लगातार दूसरों की 'परफेक्ट' लाइफ देखने से तुलना की भावना जन्म लेती है, जिससे तनाव, चिंता और अवसाद बढ़ सकता है।
- **उत्पादकता में कमी:** लगातार नोटिफिकेशन्स और अंतहीन स्क्रॉलिंग ध्यान भंग करती है और काम या अध्ययन में एकाग्रता को तोड़ती है।
- **सामाजिक अलगाव:** वर्चुअल दुनिया में अधिक समय बिताने से वास्तविक रिश्ते कमजोर होते हैं और एकाकीपन बढ़ता है।
- **साइबर खतरों का जोखिम:** गोपनीयता का उल्लंघन,

फेक न्यूज़ का शिकार होना और ऑनलाइन उत्पीड़न (साइबर बुलिंग) का खतरा बढ़ जाता है।

विवेकपूर्ण उपयोग के लिए अभिनव सिद्धांत

विवेकपूर्ण उपयोग के लिए हमें अपनी आदतों में कुछ मौलिक और रचनात्मक बदलाव लाने होंगे:

1. डिजिटल 'माइंडफुलनेस' (सचेतनता) का अभ्यास करें

'डिजिटल माइंडफुलनेस' का अर्थ है सचेत होकर सोशल मीडिया का उपयोग करना, न कि स्वचालित ढंग से।

- **उद्देश्य निर्धारित करें:** ऐप खोलने से पहले खुद से पूछें: मैं अभी क्या जानने या करने आया हूँ? बिना उद्देश्य के केवल समय बिताने के लिए स्क्रॉल न करें।
- **नोटिफिकेशन पर नियंत्रण:** केवल आवश्यक संदेशों की सूचना को छोड़कर, बाकी सभी 'लाइक', 'कमेंट' और अन्य नोटिफिकेशन्स को बंद कर दें। यह लगातार व्यवधान को समाप्त करता है।

2. 'टाइम-बॉक्सिंग' तकनीक को अपनाएं

उत्पादकता बढ़ाने वाली 'टाइम-बॉक्सिंग' तकनीक को सोशल मीडिया पर लागू करें:

- **समय स्लॉट निर्धारित करें:** सोशल मीडिया चेक करने के लिए दिन में दो या तीन निश्चित समय स्लॉट (उदाहरण के लिए: सुबह 15 मिनट, शाम

20 मिनट) तय करें।

- **काम के दौरान दूरी:** कार्य या अध्ययन के समय अपने फोन को पहुँच से दूर रखें या 'डू नॉट डिस्टर्ब' मोड पर रखें।
- **सोने से पहले ब्रेक:** सोने से कम से कम एक घंटा पहले सभी स्क्रीन्स (फोन, लैपटॉप) को बंद कर दें, ताकि नींद की गुणवत्ता बेहतर हो सके।

3. उपभोक्ता से निर्माता बनें

निष्क्रिय रूप से सामग्री का उपभोग करने के बजाय, सकारात्मक सामग्री का निर्माण करने पर ध्यान केंद्रित करें:

- **सीखने पर ध्यान दें:** मनोरंजन के पोस्ट की जगह, व्यक्तिगत विकास, शिक्षा, या कौशल से संबंधित प्रोफाइल्स और ग्रुप्स को फॉलो करें।
- **मूल्यवर्धित पोस्ट:** अपने विचारों, अनुभवों या ज्ञान को सकारात्मक ढंग से साझा करें जो दूसरों के लिए प्रेरणादायक या सहायक हो।
- **अर्थपूर्ण जुड़ाव:** सतही 'लाइक' करने के बजाय, विचारपूर्ण टिप्पणी करें या रचनात्मक प्रश्न पूछें।

4. 'इमोशनल फिल्टर' (भावनात्मक छत्री) का प्रयोग

कोई भी सामग्री साझा करने या प्रतिक्रिया देने से पहले एक मानसिक जाँच करें:

- **सत्यता:** क्या यह जानकारी सत्य है? (फेक न्यूज़ से बचें)
- **आवश्यकता:** क्या इसे साझा करना आवश्यक है?
- **दयालुता:** क्या मेरी टिप्पणी दयालु है? (साइबर बुलिंग से बचें)
- **गोपनीयता:** क्या मैं अपनी या किसी और की गोपनीयता का उल्लंघन तो नहीं कर रहा हूँ?

भविष्य की राह

सोशल मीडिया एक शक्तिशाली उपकरण है—यह न अच्छा है, न बुरा। इसका मूल्य पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसका उपयोग कैसे करते हैं। विवेकपूर्ण उपयोग हमें इस मंच का मालिक बनाता है, न कि इसका गुलाम।

एक जिम्मेदार डिजिटल नागरिक बनकर, हम न केवल अपने मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं, बल्कि इस मंच को एक सकारात्मक, ज्ञानवर्धक और सुरक्षित स्थान भी बना सकते हैं। आइए, इस डिजिटल क्रांति का नेतृत्व समझदारी और बुद्धिमानी से करें।

प्रवक्ता अंग्रेजी

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3,

जयपुर

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।

— लोकमान्य तिलक

हिंदी कहानी परंपरा : यथार्थ और कल्पना का समन्वय

विमलेश कुमार पाण्डेय



कहानी साहित्य की वह प्राचीनतम और सर्वाधिक प्रभावशाली विधा है, जिसका उद्भव मानव सभ्यता के आरंभिक विकास के साथ ही अंगीकार किया जाता है। जब मानव ने अपने अनुभवों, संवेदनाओं और विचारों को शब्दों में व्यक्त करना प्रारंभ किया, उसी क्षण कथा का स्वरूप विकसित हुआ। कथन मानव की सहज प्रवृत्ति है और अपने मनोभावों को दूसरों के साथ साझा करने की आकांक्षा ने ही कहानी को जन्म दिया। इस प्रकार कहानी मानव जीवन की सहचरी बनकर युगों-युगों से सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक चेतना को अभिव्यक्त करती रही है।

हिंदी कहानी एक ऐसी सशक्त साहित्यिक विधा है, जो जीवन की जटिलताओं, सामाजिक विसंगतियों और मानसिक द्वंद्वों को अपने भीतर समेटकर सरल, प्रभावशाली और भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है। यह पाठक के व्यक्तित्व के समक्ष दर्पण बनकर उपस्थित होती है, जिससे वह अपने कर्मों, विचारों और आचरण का आत्मावलोकन कर सके। यद्यपि कहानियाँ कल्पना के धरातल पर रची जाती हैं, तथापि उनकी जड़ें यथार्थ में ही निहित होती हैं। मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ-ईदगाह, कफन और पूस की रात-इस यथार्थपरकता का उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिनमें सामाजिक सच्चाइयों और मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण मिलता है।

हिंदी कहानी गद्य साहित्य का एक महत्वपूर्ण और स्वतंत्र रूप है। इसे उपन्यास का सूक्ष्मतम रूप कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें पात्र, संवाद, कथानक और

परिवेश विद्यमान होते हैं, किंतु उपन्यास की भाँति घटनाओं का विस्तृत विस्तार नहीं होता। सीमित शब्दों में व्यापक अर्थ की अभिव्यक्ति कहानी की सबसे बड़ी शक्ति है। जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ, जैसे आकाशदीप, तथा चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की अमर कहानी उसने कहा था, इस सघनता और भावनात्मक गहराई का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

विषय-वस्तु और भावभूमि की दृष्टि से हिंदी कहानी के अनेक रूप दिखाई देते हैं-प्रेम और विरह, घृणा और संघर्ष, देशभक्ति और बलिदान, शौर्य और पराक्रम, दुःख और करुणा, सुख और उल्लास, रहस्य और भय, जासूसी और रोमांच आदि शामिल हैं। देशभक्ति और बलिदान की भावना को चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' तथा भगवतीचरण वर्मा की कहानियों में प्रभावी रूप से देखा जा सकता है, जबकि मनोवैज्ञानिक यथार्थ को यशपाल, अज्ञेय और मोहन राकेश की कहानियाँ गहराई से अभिव्यक्त करती हैं।

स्वतंत्रता के बाद हिंदी कहानी में नई कहानी आंदोलन के अंतर्गत जीवन के आंतरिक संघर्ष, अकेलापन और अस्तित्वबोध प्रमुख विषय बने। मोहन राकेश की आधे अधूरे (कथात्मक प्रवृत्ति), कमलेश्वर की कहानियाँ तथा राजेंद्र यादव की रचनाएँ आधुनिक मानव की मानसिक जटिलताओं को सशक्त रूप प्रदान करती हैं। वहीं हरिशंकर परसाई ने व्यंग्यात्मक कहानियों के माध्यम से सामाजिक रूढ़ियों और खोखले आडंबरों पर तीखा प्रहार किया।

विशेष रूप से बच्चों के साहित्य में हिंदी कहानी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। सुभद्राकुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी तथा विष्णु प्रभाकर की रचनाएँ बच्चों और युवाओं में नैतिक मूल्यों, देशप्रेम और मानवीय संवेदनाओं को विकसित करने में सहायक सिद्ध होती हैं। कहानियों के माध्यम से बच्चे सही-गलत का भेद समझते हैं और उनके संस्कारों का निर्माण सहज रूप में होता है।

कहानी की प्रभावशीलता का मुख्य कारण उसके सजीव पात्र और सारगर्भित संवाद हैं, जो पाठक के हृदय और मस्तिष्क में स्थायी स्थान बना लेते हैं। पात्रों के अनुभव और संघर्ष पाठक को आत्मीय प्रतीत होते हैं और वह उन्हें सहजता से स्वीकार कर लेता है। यही कारण है कि सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से कहानी को साहित्य की सबसे सुंदर, सरल और प्रभावशाली विधा माना जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि हिंदी कहानी न केवल साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है, बल्कि यह मानव जीवन, समाज और संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। कथा-वस्तु, पात्रों और संवादों के सहारे हिंदी कहानी जीवन की वास्तविकताओं को सहज, प्रभावपूर्ण और सारगर्भित रूप में प्रस्तुत करती

है। मानव सभ्यता के आरंभ से लेकर आधुनिक समय तक कहानी ने अपने स्वरूप और शिल्प में निरंतर परिवर्तन करते हुए प्रत्येक युग की चेतना और संवेदनशीलता को अभिव्यक्त किया है।

प्रेमचंद से लेकर मोहन राकेश, अज्ञेय, कमलेश्वर और हरिशंकर परसाई जैसे कथाकारों ने हिंदी कहानी को सामाजिक यथार्थ, मनोवैज्ञानिक गहराई और वैचारिक प्रतिबद्धता प्रदान की, वहीं बाल एवं प्रेरणादायक कहानियों ने नई पीढ़ी के नैतिक और संस्कारात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कल्पना और यथार्थ के संतुलन ने हिंदी कहानी को न केवल पठनीय बनाया है, बल्कि उसे जीवनोपयोगी भी सिद्ध किया है।

अतः कहा जा सकता है कि हिंदी कहानी मनुष्य के विचार, आचरण और दृष्टिकोण को परिष्कृत करने वाली एक सशक्त साहित्यिक विधा है। यह समाज का दर्पण होने के साथ-साथ दिशा-निर्देशक भी है, जो पाठक को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है। अपने संक्षिप्त रूप में भी व्यापक प्रभाव छोड़ने की क्षमता के कारण हिंदी कहानी सदैव प्रासंगिक रही है और भविष्य में भी मानव संवेदना की सशक्त अभिव्यक्ति बनी रहेगी।

अनुवाद अधिकारी

देशभर को बांधने के लिए भारत के भिन्न-भिन्न हिस्से एक दूसरे से संबंधित रहें, इसके लिए हिन्दी की जरूरत है।

—जवाहरलाल नेहरू

जल शक्ति अभियान और जल जीवन मिशन की सफलता की कहानी

जिला कारगिल, लद्दाख (यूटी)

एक प्रेरणादायक उदाहरण – जल संरक्षण, जल प्रबंधन और सामुदायिक विकास का



आदित्य शर्मा

जल भारत की सभ्यता, संस्कृति और जीवन की बुनियाद है। हिमालयी क्षेत्र में स्थित केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख का कारगिल जिला, जहाँ प्राकृतिक परिस्थितियाँ अत्यंत कठिन हैं, सर्दियाँ लंबी और तापमान -30°C तक; गर्मियों में तेज़ धूप और अत्यधिक बर्फ पिघलने पर नदी प्रवाह में अचानक वृद्धि, ऐसे में जल संरक्षण का महत्व और भी बढ़ जाता है।

ग्लोबल वार्मिंग आज दुनिया के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुकी है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण ध्रुवीय और हिमालयी क्षेत्रों में ग्लेशियर तेज़ी से पिघल रहे हैं। यह जल स्तर में वृद्धि, समुद्री तटीय क्षेत्रों में बाढ़, और नदी जल प्रवाह में असंतुलन जैसी समस्याओं को जन्म देता है। ग्लेशियर पिघलने से केवल स्थानीय जल स्रोतों पर ही असर नहीं पड़ता, बल्कि विश्व भर में पेयजल, सिंचाई और ऊर्जा उत्पादन के लिए उपलब्ध जल संसाधनों पर भी गंभीर प्रभाव पड़ता है। यह एक वैश्विक समस्या है, जिसका समाधान केवल राष्ट्रीय प्रयासों से नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सतत जलवायु नीतियों के माध्यम से ही संभव है।

इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए, जल शक्ति मंत्रालय द्वारा प्रारंभ किए गए जल शक्ति अभियान (JSA) और जल जीवन मिशन (JJM) ने कारगिल जिले में जल प्रबंधन और जल आपूर्ति के क्षेत्र में एक नया मोड़ दिया है। कारगिल जिले में इन दोनों योजनाओं का सम्मिलित प्रभाव इतना विशिष्ट और सफल रहा है कि इसे राष्ट्रीय

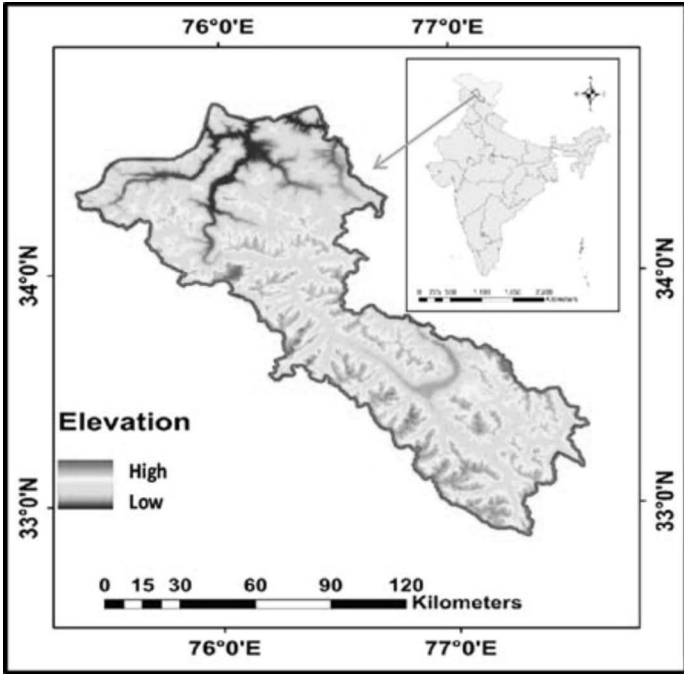
स्तर पर एक मॉडल के रूप में देखा जा रहा है। विशेष रूप से, चरम जलवायु स्थितियों और कठिन हिमालयी भूभाग में भी, जहाँ लद्दाख में वर्षा सबसे कम होती है और यह क्षेत्र सूखा प्रभावित (drought-prone) माना जाता है, JSA और JJM योजनाओं के माध्यम से जल संरक्षण और 'हर घर जल' गतिविधियों के कारण आम नागरिकों तक इसका प्रत्यक्ष लाभ पहुँच रहा है। इन कार्यक्रमों के तहत स्थानीय स्तर पर जल संरचनाओं का निर्माण, हिमनद एवं बर्फ संग्रहण, भूजल पुनर्भरण और पाइप जल आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है, जिससे ग्रामीण समुदायों का जीवन स्तर बेहतर हुआ है।

जल शक्ति अभियान (JSA), 2019 में शुरू किया गया, एक राष्ट्रीय जल संरक्षण कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य जल संकटग्रस्त जिलों में वैज्ञानिक, तकनीकी और सामुदायिक स्तर पर जल प्रबंधन सशक्त बनाना है। इसके तहत वर्षा जल और हिमपात का संरक्षण, पारंपरिक जल स्रोतों का पुनर्जीवन, भूजल पुनर्भरण और हिमनद जल भंडारण पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

जल जीवन मिशन (JJM), 2019 में हर घर जल के लक्ष्य के साथ शुरू हुआ, ग्रामीण परिवारों तक नियमित और सुरक्षित पाइप जल पहुँचाने पर केंद्रित है। यह मिशन समुदाय आधारित संचालन, जल गुणवत्ता निगरानी और जनस्वास्थ्य सुधार के माध्यम से ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता और सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ाता है।

कारगिल जिला : एक परिचय

लोकेशन एवं डिजिटल एलिवेशन मैप - कारगिल जिला



भौगोलिक स्थिति: लद्दाख के पश्चिमी भाग में स्थित कारगिल जिला भारत की पर्वतीय भौगोलिक विविधता का उत्कृष्ट उदाहरण है। समुद्र तल से लगभग 2,600 मीटर से 7,200 मीटर की ऊँचाई तक फैला यह क्षेत्र अत्यंत दुर्गम, ऊबड़-खाबड़ पर्वतों, ग्लेशियरों, संकरी घाटियों और विस्तृत शुष्क ठंडे रेगिस्तानी विस्तार के लिए जाना जाता है। जिले का कुल 14,086 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र इसे लद्दाख के प्रमुख प्रशासनिक इकाइयों में से एक बनाता है। यहाँ की जनसंख्या मुख्यतः नदी घाटियों और पर्वतीय ढलानों पर बसे छोटे-छोटे गाँवों में निवास करती है, जहाँ कठोर भौगोलिक परिस्थितियाँ, सीमित कृषि भूमि और लंबी, कड़ाके की सर्दियाँ दैनिक जीवन को चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। कारगिल का जल संसाधन तंत्र मुख्यतः तीन महत्वपूर्ण नदियों - इंडस, सुरु और द्रास पर आधारित है। इंडस नदी, जो एशिया की सबसे प्राचीन और महान नदियों में से एक मानी जाती है, कारगिल

जिले से होकर बहती है और कई गाँवों को जीवनदायिनी जल उपलब्ध कराती है। यह नदी कृषि, सिंचाई और पेयजल का मुख्य स्रोत है, साथ ही रणनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका जल आगे चलकर पाकिस्तान में प्रवाहित होता है।

जलवायु: जलवायु की दृष्टि से कारगिल एक ठंडा समशीतोष्ण (Cold Temperate) क्षेत्र है। यहाँ की गर्मियाँ अपेक्षाकृत छोटी होती हैं, जब दिन का तापमान लगभग 23.3°C तक पहुँचता है, परंतु रातें हमेशा ठंडी बनी रहती हैं। सके विपरीत सर्दियाँ अत्यंत लंबी होती हैं, जिनमें तापमान अक्सर -15°C तक गिर जाता है। जिले से लगभग 56 किलोमीटर दूर स्थित द्रास, जहाँ तापमान -60°C तक दर्ज किया गया है, विश्व के सबसे ठंडे आबाद स्थानों में शामिल है। जनवरी माह में औसत तापमान -8.8°C रहता है। अक्टूबर से मार्च तक भारी हिमपात के कारण कई क्षेत्रों में मोटी बर्फ की परतें जम जाती हैं, जो आवागमन तथा कृषि गतिविधियों को प्रभावित करती हैं। कारगिल में वार्षिक औसत वर्षा 318 मिमी है, जो भारत के अन्य पर्वतीय क्षेत्रों की तुलना में काफी कम मानी जाती है। वर्षा के इस असमान वितरण का प्रत्यक्ष प्रभाव स्थानीय कृषि, पेयजल स्रोतों और जल संरक्षण प्रणालियों पर पड़ता है। समग्र रूप से, कारगिल का भौगोलिक विस्तार, नदी तंत्र और जलवायु इसे एक अनोखा पर्वतीय जिला बनाते हैं, जहाँ प्रकृति की कठोर परिस्थितियों के बीच भी स्थानीय लोगों ने अपनी जीवनशैली और परंपराओं को टिकाए रखा है।

जल संसाधन: कारगिल में जल संसाधन मुख्यतः नदी-आधारित हैं। वर्षा कम होने के कारण जल उपलब्धता का बड़ा हिस्सा नदी, हिमनद (Glaciers) और बर्फ पिघलने वाले जल पर निर्भर करता है। मुख्य स्रोतों में सुरु, द्रास और इंडस नदियाँ प्रमुख हैं, जो सिंचाई,

पेयजल और घरेलू उपयोग के लिए महत्वपूर्ण हैं। गर्मियों में पिघलने वाले ग्लेशियर नदी प्रवाह को स्थिर बनाए रखते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में झरने और छोटी जलधाराएँ, स्प्रिंग्स (स्थानीय भाषा में चश्मा) भी स्थानीय जल आपूर्ति में योगदान करती हैं। भूजल की उपलब्धता भूगर्भीय संरचनाओं के कारण सीमित है, जिससे अधिकांश क्षेत्रों में सतही जल और हिमनद जल पर निर्भरता अधिक रहती है। प्राकृतिक प्रवाह की दृष्टि से सूरू और ड्रास नदी का लगभग 90% जल भारत की सीमा पार पाकिस्तान की ओर सिंधु नदी के माध्यम से चला जाता है। इस कारण कारगिल क्षेत्र जल संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील माना जाता है। सीमित स्थानीय उपलब्धता और भारी जल-निर्यात के कारण इस क्षेत्र के लिए जल-संरक्षण, हिमपात आधारित जल संग्रहण तथा जल स्रोतों का पुनर्जीवन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

कारगिल में जल शक्ति अभियान की विशेष एवं नवाचार आधारित गतिविधियाँ

कारगिल जिला प्रशासन ने JSA को स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप नवीन तकनीकों के साथ लागू किया। यहाँ पहाड़ी एवं हिमपात वाले क्षेत्रों में जल संरक्षण के लिए पारंपरिक तरीकों को आधुनिक विज्ञान से जोड़ा गया। इस संदर्भ में, केंद्रीय टीम जिसमें केंद्रीय नोडल अधिकारी (CNO) श्रीमती गीतिका शर्मा, IAS, उप सचिव, खनिज मंत्रालय एवं तकनीकी अधिकारी (TO) श्री आदित्य शर्मा, वैज्ञानिक 'बी', केंद्रीय भूजल बोर्ड ने 28 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2025 तक लद्दाख के केंद्रशासित प्रदेश कारगिल जिले का दौरा किया। इस दौरे का उद्देश्य JSA: CTR के अंतर्गत चल रहे और पूर्ण किए गए कार्यों की प्रगति का अवलोकन और मूल्यांकन करना था। निरीक्षण के दौरान निम्नलिखित जल संरक्षण संरचनाओं का दौरा किया गया:

कृत्रिम ग्लेशियर (Artificial Glaciers)

कारगिल जिले में JSA के तहत देश में पहली बार अनोखे क्षैतिज कृत्रिम ग्लेशियर विकसित किए गए। इनकी स्थापना अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में क्षैतिज खाइयाँ (horizontal trenches) बनाकर की जाती है, जहाँ सर्दियों में प्राकृतिक हिमपात को संग्रहित किया जाता है। गर्मियों में यह धीरे-धीरे पिघलता है और सतही जल तथा भूजल के पुनर्भरण का महत्वपूर्ण स्रोत बनता है। यह प्रणाली स्थानीय स्प्रिंग्स (चश्मों) को पुनर्जीवित करने में भी मदद करती है, जो कारगिल की जीवन रेखा माने जाते हैं। इस परियोजना के अंतर्गत 4 कृत्रिम ग्लेशियर, 14 स्नो एवरेज बंड्स और 17 स्नो हार्वेस्टिंग संरचनाएँ बनाई गई हैं, जिनसे गर्मियों में पानी की उपलब्धता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

कृत्रिम ग्लेशियर, जैसे कि प्रसिद्ध “आइस स्तूप” (Ice Stupas), कारगिल में जल संकट का एक अभिनव समाधान प्रस्तुत करते हैं। इन्हें इस प्रकार डिज़ाइन किया गया है कि सर्दियों में अतिरिक्त जल, जो अन्यथा बर्बाद हो जाता, उसे बड़े बर्फ के शंकु में जमा किया जाता है और गर्मियों में धीरे-धीरे पिघलने लगता है। यह पानी उन महीनों में कृषि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, इस प्रणाली से सर्दियों में बर्बाद होने वाले जल का संरक्षण किया जाता है और सूखे वसंत महीनों में इसका उपयोग करके कृषि में मदद मिलती है। अधिक ऊँचाई से ग्लेशियर पिघलने वाला पानी या पहाड़ी नालों का पानी पाइपों के माध्यम से संरचना तक पहुँचाया जाता है। शून्य से कम तापमान वाली सर्दियों में पानी को छिड़काव या टपकाव के माध्यम से बड़े शंकु के आकार में जमाया जाता है। गर्मियों में बर्फ धीरे-धीरे पिघलती है और फसलों के लिए आवश्यक पानी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करती है। कृत्रिम ग्लेशियर जल संकट को कम

करने में मदद करते हैं क्योंकि यह सर्दियों में अधिक जल और गर्मियों में कम जल के बीच के अंतर को पूरा करता है। यह शुरुआती बुवाई के लिए आवश्यक पानी उपलब्ध कराकर कृषि हेतु उपयोगी है, गर्मी के कारण फसल नुकसान को कम करता है और पिघलते प्राकृतिक ग्लेशियरों के प्रभाव से निपटने का एक स्थायी, कम-तकनीकी समाधान प्रदान करता है। इसके अलावा, इन परियोजनाओं में स्थानीय ग्रामीणों की भागीदारी होती है, जिससे सामुदायिक सहभागिता और स्थानीय क्षमता निर्माण भी सुनिश्चित होता है, कारगिल, लेह लदाख यूटी में कृत्रिम ग्लेशियर एक बहुत ही सराहनीय कदम है।

JSA के तहत निर्मित अन्य प्रमुख संरचनाएँ:

जल शक्ति अभियान (JSA) के तहत कारगिल जिले में कई महत्वपूर्ण जल संरक्षण संरचनाएँ निर्मित की जा रही है, इनमें 73 तालाब (Percolation Ponds), 09 जल संरक्षण संरचनाएँ जैसे चेक-डैम और डाइवर्शन स्ट्रक्चर बनाए गए हैं, जो नदी और नालों के प्रवाह को नियंत्रित कर पानी को संरक्षित करते हैं। साथ ही, 7 जल संग्रहण संरचनाएँ, ज़िंग और तालाब भी बनाए गए हैं, जो स्थानीय समुदायों को जल आपूर्ति और कृषि के लिए आवश्यक पानी प्रदान करने में मदद कर रहे हैं। साथ ही ये सभी संरचनाएँ भूजल पुनर्भरण और प्राकृतिक स्प्रिंग्स को मजबूत करती हैं।



SHASHI LAKE

जल जीवन मिशन (JJM) – कारगिल में जीवन बदलने वाली पहल

कारगिल जिले में पेयजल आपूर्ति की पारंपरिक व्यवस्था हमेशा चुनौतीपूर्ण रही है। पहले, स्थानीय



Village -PRNTI PANIKHAR



Percolation Tank at Kurtan Mulbekh

महिलाएँ प्रतिदिन कई किलोमीटर दूरी तय कर बर्फ और प्राकृतिक स्प्रिंग्स से जल एकत्र करती थीं, जिसके कारण प्रतिदिन 3-6 घंटे का समय व्यर्थ होता था, और सर्दियों में जल स्रोतों का जमना सामान्य समस्या था। जल जीवन मिशन (JJM) के क्रियान्वयन ने इस परिदृश्य को मौलिक रूप से परिवर्तित किया। मिशन के तहत पाइप नेटवर्क द्वारा लगभग प्रत्येक घर तक सुरक्षित और पर्याप्त मात्रा में पेयजल उपलब्ध कराया गया, जिससे महिलाओं और बच्चों पर जल संग्रहण का श्रम कम हुआ और उनके जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ। जल आपूर्ति की नियमित निगरानी और गुणवत्ता परीक्षण के माध्यम से स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई, समय की बचत हुई, और सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि हुई।

कारगिल की सफलता स्पष्ट रूप से कई परिणामों में दिखती है। कृत्रिम ग्लेशियर, स्नो बंड्स और परकोलेशन तालाबों के निर्माण से गर्मियों में जल की उपलब्धता बढ़ी है, जिससे भूजल स्तर में सुधार हुआ। इससे स्थानीय स्प्रिंग्स का पुनर्जीवन भी संभव हुआ; जो झरने पहले गर्मियों में सूख जाते थे, अब वे नियमित जल प्रवाह प्रदान कर रहे हैं। जल जीवन मिशन (JJM) के क्रियान्वयन से ग्रामीण क्षेत्रों में पाइप जल आपूर्ति स्थिर और गुणवत्तापूर्ण हो गई है, जिससे पेयजल आपूर्ति में निरंतरता सुनिश्चित हुई। महिलाओं का सशक्तिकरण भी इस कार्यक्रम का महत्वपूर्ण परिणाम रहा है, क्योंकि अब पानी लाने में लगने वाला समय शिक्षा, परिवार और आर्थिक गतिविधियों में उपयोग हो रहा है। कृषि और आजीविका में भी सुधार हुआ है, क्योंकि पिघले हुए कृत्रिम ग्लेशियर

का पानी खेतों, चरागाहों और बागवानी क्षेत्रों तक पहुँच रहा है। समग्र रूप से, कारगिल ने चरम जलवायु स्थितियों में जल प्रबंधन का एक प्रभावी और सतत मॉडल स्थापित किया है, जो अन्य हिमालयी क्षेत्रों के लिए मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :

जिले की भौगोलिक और जलवायु परिस्थिति-विशेषकर अत्यधिक ठंड, सीमित कार्य अवधि और कम वर्षा जल संरक्षण कार्यों को चुनौतीपूर्ण बनाती है। इसके बावजूद पारंपरिक जल प्रबंधन ज्ञान, स्थानीय संरचनाएँ और आधुनिक तकनीकों का उपयोग जल सुरक्षा को मजबूत बना सकता है। सामुदायिक सहभागिता और सुव्यवस्थित जल प्रबंधन से दीर्घकालिक जल उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है। परियोजनाओं की योजना अत्यधिक ठंडे मौसम को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिक रूप से तैयार की जानी चाहिए। ग्रामीण समुदायों में जल संरक्षण की जागरूकता बढ़ाई जाए और रखरखाव में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए। वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित एवं GIS आधारित मूल्यांकन द्वारा संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान कर अधिक संख्या में कृत्रिम ग्लेशियर, आइस स्तूप और परकोलेशन तालाब जैसी संरचनाओं का प्राथमिकता से निर्माण किया जाना चाहिए, जिससे जल उपलब्धता और जल सुरक्षा में सुधार हो सके।

वैज्ञानिक - बी (भूजल मौसम वैज्ञानिक)

केन्द्रीय भूमिजल बोर्ड, पश्चिमी क्षेत्र,
जल शक्ति मंत्रालय, जयपुर

राजस्थान के GI टैग: कला, संस्कृति और शिल्प की विशिष्ट पहचान



मोहम्मद आकिब खान



भौगोलिक संकेत टैग (Gi Tag) एक विशिष्ट चिह्न या नाम है जिसका उपयोग उन उत्पादों पर किया जाता है जो किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थान या मूल से संबंधित होते हैं। यह एक प्रकार का बौद्धिक संपदा अधिकार है। यह टैग उस उत्पाद की उत्पत्ति की पहचान कराता है और यह सुनिश्चित करता है कि उत्पाद में वे गुणवत्ता, प्रतिष्ठा या विशेषताएँ मौजूद हैं जो उस क्षेत्र विशेष के कारण ही हैं। यह टैग किसी भी अधिकृत उपयोगकर्ता को उत्पाद के नाम का उपयोग करने की अनुमति देता है और अनधिकृत उपयोग या नकल को कानूनी रूप से रोकता है। इसके साथ ही विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के किसानों, कारीगरों और उत्पादकों की आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देता है, क्योंकि उन्हें अपने प्रमाणिक उत्पाद का बेहतर मूल्य मिलता है। जीआई टैग मिलने से उत्पाद को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में एक अनूठी पहचान मिलती है, जिससे निर्यात में वृद्धि होती है।

राजस्थान अपनी समृद्ध विरासत, जीवंत संस्कृति और अद्वितीय हस्तशिल्प के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ के उत्पादों को प्राप्त जीआई टैग इसकी पारंपरिक कला, कौशल और विशिष्ट कृषि उत्पादों को वैश्विक स्तर पर एक विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। राजस्थान को अब तक 21 उत्पादों के लिए जीआई टैग मिल चुका है। इसमें जयपुर की ब्लू पॉटरी, बीकानेरी भुजिया, सांगानेरी हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग, कोटा डोरिया, फड़ पेंटिंग, कठपुतलियाँ, पोकरण पॉटरी, मकराना मार्बल, बीकानेर ऊस्ता कला, पाली की मारवाड़ी बन्धेज, जोधपुर बन्धेज, बीकानेर की मोजड़ी, सोजत मेहँदी आदि शामिल हैं।

यंग प्रोफेशनल
केंद्रीय संचार ब्यूरो, प्रादेशिक कार्यालय, जयपुर
(राजस्थान)

यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकता है।

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

AI को समझना: कार्यक्षमता बढ़ाने से लेकर मानसिक क्षमता पर प्रभाव तक

ज्योति मीना



आज के डिजिटल युग में ChatGPT, Perplexity और अन्य AI टूल्स हमारी कार्यक्षमता कई गुना बढ़ा सकते हैं। इन टूल्स का सबसे अच्छा उपयोग तब होता है जब हम इन्हें केवल जवाब प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि सोचने, प्लानिंग करने और काम को तेज़ बनाने के लिए एक सहायक पार्टनर की तरह इस्तेमाल करें। उदाहरण के लिए- किसी भी जटिल विषय, नीति या तकनीकी विषय पर शोध करने में Perplexity तेज़ और सटीक वेब-आधारित जानकारी देता है, जबकि ChatGPT उस जानकारी को संरचित रूप में समझाने, ड्राफ्ट तैयार करने, कंटेंट सुधारने और नए विचार देने में मदद करता है। दोनों टूल्स को मिलाकर रिपोर्ट, नोट्स, ई-मेल, भाषण, प्रेजेंटेशन या डेटा-आधारित विश्लेषण कम समय में और अधिक गुणवत्ता के साथ तैयार किए जा सकते हैं। उत्पादकता बढ़ाने का सबसे असरदार तरीका यह है कि आप स्पष्ट प्रश्न पूछें, उदाहरण दें, उद्देश्य लिखें और आउटपुट को एक-एक चरण में refine करवाएं। इस तरह AI टूल्स न केवल समय बचाते हैं बल्कि आपके काम की गुणवत्ता भी उच्च स्तर पर ले जाते हैं।

AI टूल्स के उपयोग के फायदे (Merits)

AI टूल्स के उपयोग से कार्यप्रणाली अधिक स्मार्ट और तेज़ होती है। Perplexity तत्काल स्रोत-आधारित और नवीनतम जानकारी प्रदान करता है, जिससे रिसर्च, नीति-निर्माण, प्रेजेंटेशन और निर्णय प्रक्रिया में सटीकता आती है। वहीं ChatGPT लेखन, कंटेंट डेवलपमेंट और

संप्रेषण के क्षेत्र में बहुत प्रभावी है, क्योंकि यह विचारों को स्पष्ट रूप देता है, जटिल विषयों को सरलतम भाषा में समझाता है और भाषा की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है। दोनों टूल्स के संयोजन से उपयोगकर्ता कम समय में अधिक परिणाम प्राप्त करते हैं-जिससे प्रोफेशनल दक्षता, निर्णय क्षमता और रचनात्मकता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। ये टूल्स विशेष रूप से प्रशासनिक कार्य, प्रशिक्षण सामग्री, नोट शीट, रिपोर्ट, भाषण और दस्तावेज़ लेखन के क्षेत्र में अद्वितीय सहायक साबित हो रहे हैं।

AI टूल्स के उपयोग की सीमाएँ और नुकसान (Demerits)

हालाँकि AI टूल्स लाभकारी हैं, लेकिन इनके उपयोग में कुछ जोखिम और सीमाएँ भी मौजूद हैं। कभी-कभी AI मॉडल सांख्यिकीय पैटर्न के आधार पर गलत या भ्रामक जानकारी उत्पन्न कर सकते हैं, जिसे तकनीकी रूप से “हैलुसिनेशन” कहा जाता है। प्रशिक्षण डेटा में मौजूद पूर्वाग्रह (Algorithmic Bias) के कारण लिंग, जाति या सामाजिक असमानताओं से संबंधित पक्षपात की संभावनाएँ भी बनी रहती हैं। इसके अतिरिक्त, रोजगार विस्थापन और कौशल-अंतराल की चुनौती भी सामने आई है, क्योंकि कम-कौशल वाले कार्यों में स्वचालन तेजी से बढ़ रहा है। साइबर सुरक्षा और डीपफेक जैसी आधुनिक तकनीकें गलत इरादों के साथ उपयोग होने पर पहचान की चोरी, गलत प्रचार और सामाजिक अस्थिरता पैदा कर सकती हैं। सरकारी या कार्यालयीय वातावरण में AI टूल्स का उपयोग करते समय संवेदनशील डेटा साझा

करने का जोखिम सबसे बड़ा खतरा बन सकता है, इसलिए डॉक्यूमेंट्स, व्यक्तिगत विवरण, आधार, बैंक जानकारी, पासवर्ड और OTP जैसी संवेदनशील जानकारी कभी भी AI में अपलोड नहीं करनी चाहिए। यदि AI पर अत्यधिक निर्भरता बढ़ने से रचनात्मकता घटने, मानवीय सोच सीमित होने और निर्णय क्षमता कमजोर होने की भी संभावना रहती है।

निष्कर्ष-

तेजी से बदलते डिजिटल युग में ChatGPT, Perplexity जैसे AI टूल्स केवल तकनीक नहीं, बल्कि कार्यशैली को बदलने वाले मजबूत सहायक बन चुके हैं। उनका सही उपयोग कार्यक्षमता बढ़ाता है, समय बचाता है और गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार लाता है। लेकिन यह भी समान रूप से आवश्यक है कि हम इन टूल्स पर पूरी तरह निर्भर न होकर मानवीय सोच, तर्क, रचनात्मकता और सीखने की क्षमता को प्राथमिकता दें। AI अभी लाभकारी है जब उसे एक सहयोगी की तरह उपयोग किया जाए न कि अपने ज्ञान, निर्णय क्षमता और कौशल का विकल्प बनाया जाए। इसलिए संतुलित उपयोग, डेटा सुरक्षा, सत्यापन, और निरंतर कौशल-विकास ही भविष्य में सफलता की वास्तविक कुंजी हैं। सही दिशा में उपयोग किया जाए तो AI हमारे काम को तेज़ नहीं, बल्कि स्मार्ट और प्रभावी बनाता है।

सांख्यिकीय अन्वेषक ग्रेड-II
जनगणना कार्य निदेशालय, राजस्थान,
6-बी, झालाना डूंगरी,
जयपुर

उधर रह गया

राजकुमार सिंह

शहर क्या आया जीवन जीने
साफ हवा का सहलाना उधर रह गया।
झूठा आडम्बर देख दिखावा
सच्चे इंसान का मिल पाना उधर रह गया।
लाखों करोड़ों कमा कर भी
कहने वाला अपना उधर रह गया।
चाचा, ताऊ, फूफा, मामा और नाना
हमारा रूठना और उनका मनाना उधर रह गया।
व्यवहार में सबके परिपक्वता है
मासूम मुस्कराना उधर रह गया।
झूठे दिखावे में पागल हुआ इंसान
सच्चा हंसना व रोना उधर रह गया।
होती है बस काम की बातें
बहाना बनाने वाला उधर रह गया।
किससे बोलें किससे छुपाएं
तय कर पाना उधर रह गया।
गांव की चौपाटी मेले में घूमना
दिल वाली बातें बतियाना उधर रह गया।
अब खल रहा शहर में आना
गाय भैंस का जुगलाना उधर रह गया।
अब शहर आकर हो रहा पछतावा
शुद्ध अन्न दूध हवा माखन उधर रह गया।
शहर में गांव का होगा अहसास
पेड़ पौधों का रोपण कर मुमकीन होगी मेरी आस॥

जू वा अ, लेखा अनुभाग
वायु सेना स्टेशन, जयपुर

नमक आयुक्त संगठन (SCO): उत्तरदायित्व, उपलब्धियाँ एवं आधुनिक प्रबंधन की दिशा में प्रगति

डॉ. तारा चंद तँवर



नमक मनुष्य के जीवन का अत्यंत आवश्यक अवयव है। यह न केवल भोजन में स्वाद, संतुलन एवं स्वास्थ्य बनाए रखने में महत्वपूर्ण है, बल्कि रसायन, काँच, चमड़ा एवं औषधि उद्योग सहित अनेक औद्योगिक क्षेत्रों का भी मूल आधार है। भारत में नमक उद्योग का इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है तथा स्वतंत्रता संग्राम में भी यह स्वाधीनता आंदोलन का प्रमुख प्रतीक रहा। चीन और अमेरिका के बाद भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा नमक उत्पादक देश है। वर्तमान में नमक उद्योग का विनियमन, उत्पादन, वितरण तथा भूमि प्रबंधन केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में है। संविधान की सातवीं अनुसूची के मद संख्या 58 में नमक को एक केंद्रीय विषय घोषित किया गया है, जो इस प्रकार है -

1. केंद्र सरकार द्वारा नमक का निर्माण, आपूर्ति एवं वितरण, तथा
2. अन्य एजेंसियों द्वारा नमक निर्माण एवं वितरण का नियंत्रण एवं विनियमन



इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत नमक आयुक्त संगठन (Salt Commissioner Organization - SCO) कार्यरत है। यह उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) का अधीनस्थ कार्यालय है, जिसका मुख्यालय 'लवण भवन', झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर में स्थित है। इसके क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई, मुंबई तथा अहमदाबाद में तथा सभी नमक उत्पादक राज्यों में फील्ड कार्यालय स्थापित हैं।

विभाग प्रमुख - नमक आयुक्त

नमक आयुक्त संगठन के वर्तमान नमक आयुक्त श्री अविनाश गुप्ता, निदेशक (DPIIT) हैं। उनके दूरदर्शी एवं नेतृत्वकारी मार्गदर्शन में संगठन ने भूमि प्रबंधन में तकनीकी सुधार, भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) आधारित प्रबंधन तंत्र के सुदृढीकरण, अतिक्रमण रोकथाम हेतु प्रभावी कार्रवाई, तथा कानूनी निगरानी प्रकोष्ठ (Legal Monitoring Cell) के माध्यम से लंबित प्रकरणों के त्वरित निस्तारण के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

संगठन की प्रशासनिक प्रणाली को अधिक पारदर्शी, सुगम, तीव्र एवं उत्तरदायी बनाने हेतु सभी कार्य e-Office प्रणाली के माध्यम से पूर्णतः डिजिटल रूप से संचालित किए जा रहे हैं, जिससे पेपरलेस ऑफिस की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त हुई है।

नमक आयुक्त के मार्गदर्शन में राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं-

- कर्मचारियों को नियमित राजभाषा प्रशिक्षण,
- राजभाषा निरीक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन,
- दैनिक कार्यों में सरल एवं मानक हिन्दी शब्दावली का उपयोग,
- उत्कृष्ट राजभाषा कार्य हेतु प्रोत्साहन एवं सम्मान।

संगठन की उपलब्धियाँ नमक आयुक्त के प्रशासनिक अनुभव, रणनीतिक दृष्टिकोण और विकासोन्मुख नेतृत्व का परिणाम हैं, जिनके अंतर्गत SCO निरंतर अधिक सशक्त, सक्षम एवं आधुनिक रूप में उभर रहा है।

संगठन की भूमिका का विकास

समय के साथ नमक आयुक्त संगठन की भूमिका में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। आज संगठन का प्राथमिक दायित्व लगभग 60,000 एकड़ सरकारी नमक विभाग की भूमि का संरक्षण, प्रबंधन एवं उपयोग सुनिश्चित करना है। ये भूमि नौ राज्यों-गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा एवं पश्चिम बंगाल में फैली हुई है।

सरकारी भूमि का संरक्षण, इसका वैज्ञानिक प्रबंधन, अतिक्रमण से सुरक्षा, भूमि हस्तांतरण प्रस्तावों की जाँच, तथा नमक उद्योग के लिए भूमि लीजिंग जैसे विविध कार्य संगठन के दायरे में आते हैं।

भूमि प्रबंधन के लिए आधुनिक तकनीक - SPLMS

भूमि प्रबंधन को व्यवस्थित और पारदर्शी बनाने हेतु Salt Pan Land Management System नामक एक आधुनिक, GIS आधारित वेब पोर्टल विकसित किया गया है। यह प्रणाली भास्करचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग एवं भू-सूचना विज्ञान संस्थान (BISAG-N) के सहयोग से बनाई गई है तथा पूरे देश में फैली नमक विभाग की

भूमि का वैज्ञानिक मानचित्रण करती है। यह प्रणाली भूमि की उपलब्धता, उसकी उपयोगिता, अवसंरचना से दूरी तथा संभावित विकास की दिशा में सटीक निर्णय लेने में सहायक होती है।

भूमि हस्तांतरण प्रक्रिया

संगठन अन्य मंत्रालयों, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों, राज्य सरकारों, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों आदि के भूमि हस्तांतरण प्रस्तावों पर कार्य करता है। जब किसी अन्य संगठन से भूमि हस्तांतरण का प्रस्ताव DPIIT के माध्यम से प्राप्त होता है, तो नमक आयुक्त की अंतिम टिप्पणियाँ/सिफारिशें/रिपोर्ट DPIIT के नमक अनुभाग को अनुमोदन हेतु प्रस्तुत की जाती हैं। DPIIT से सिद्धांततः स्वीकृति (in-principle approval) प्राप्त होने के बाद, संबंधित क्षेत्रीय कार्यालय को निर्देश दिया जाता है कि वह हस्तांतरण प्राप्त करने वाले संगठन के साथ समन्वय कर भूमि का सर्वेक्षण एवं सीमांकन कराए, ताकि भूमि का सटीक क्षेत्रफल सुनिश्चित किया जा सके। सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन पूर्ण होने के पश्चात् और भूमि/टोकन राशि तथा वृक्ष एवं भवन मूल्य प्राप्त होने पर, भूमि का औपचारिक हस्तांतरण SCO और संबंधित संगठन के बीच हस्तांतरण पत्र (MAHAZAR) पर हस्ताक्षर करके किया जाता है।

श्रमिक कल्याण के प्रयास

नमक उद्योग में काम करने वाले श्रमिक अत्यंत कठिन परिस्थितियों में श्रम करते हैं। उनके परिवार विशेषकर बच्चों के शैक्षणिक विकास हेतु भारत सरकार द्वारा Children Rewards Scheme (CRS-2025) संचालित की जा रही है। इस योजना के अंतर्गत-

- कक्षा VI-VIII : 1500
- कक्षा IX-X : 2250
- कक्षा XI-XII : 3000

पुरस्कार राशि दी जाती है। यह योजना बच्चों में

शिक्षा के प्रति उत्साह उत्पन्न करती है और श्रमिक परिवारों के आर्थिक बोझ को कम करती है।

असाइनमेंट फीस एवं भूमि किराया

नमक पैन भूमि को नमक उत्पादन हेतु खुली निविदा के आधार पर 20 वर्ष की पट्टा अवधि (लीज़िंग) पर दिया जाता है, जिससे केंद्र सरकार को राजस्व प्राप्त होता है। संगठन द्वारा इसके अंतर्गत संबंधित पट्टेदारों/लाइसेंसीज से असाइनमेंट शुल्क, ग्राउंड रेंट, पट्टा राशि, लाइसेंस शुल्क अथवा किराया वसूल किया जाता है। इसके अतिरिक्त, नमक उत्पादन के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए भूमि या भवन का अल्पकालिक पट्टा/लाइसेंस भी DPIIT के 4 मार्च 1997 के आदेश के अनुसार प्रदान किया जाता है।

निष्कर्ष

नमक आयुक्त संगठन देश में नमक उद्योग के संरक्षण एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। संगठन का ऐतिहासिक महत्व, व्यापक भूमि प्रबंधन, तकनीकी आधुनिकीकरण, पारदर्शी लीज़िंग व्यवस्था, अतिक्रमण-निरोध, श्रमिक कल्याण एवं राष्ट्रीय अवसंरचना विकास में योगदान अत्यंत सराहनीय है। सशक्त नेतृत्व एवं आधुनिक प्रबंधन पद्धतियों के माध्यम से SCO निरंतर एक सक्षम, प्रगतिशील एवं भविष्य-उन्मुख संगठन के रूप में विकसित हो रहा है।

उप नमक आयुक्त, जयपुर



जिन्दगी



रेखा चुघ

जिन्दगी की दौड़ में,
तजुरबा कच्चा ही रह गया.....॥
हम सीख ना पाये फरेब,
ओर दिल बच्चा ही रह गया.....॥
बचपन में जहाँ चाहा हंस लेते थे,
जहाँ चाहा रो लेते थे.....॥
पर अब मुस्कान को तमीज चाहिए,
और आसुओं को तन्हाई.....॥
हम भी मुस्करा लेते थे कभी बेपरवाह अन्दाज में,
देखा है आज खुद को कुछ पुरानी तस्वीरों में.....॥
चलो मुस्कुराने की वजह ढूढते हैं, तुम हमें ढूढों,
हम तुम्हें ढूढते है.....॥

कार्यालय सहायक

केन्द्रीय संचार ब्यूरो, प्रा.कार्या.,
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, जयपुर





विशाल

हम भारत के लोग



यह कविता भारत के संविधान की प्रस्तावना की पहली पंक्ति “हम भारत के लोग” से प्रेरित है।

सादा पहनावा.. मीठी बोली
सबको नमस्कार करते
हम भारत के लोग।
जल-जंगल-जमीन की पूजा करते
प्रकृति का सम्मान करते
हम भारत के लोग।
दीपावली, ईद, लोहड़ी, क्रिसमस सब साथ मिलकर मनाते
विविधता में एकता का पाठ दुनिया को पढ़ाते।
हम भारत के लोग।
धर्म का असली मतलब समझाते
अहिंसा का रास्ता दिखाते
दुनिया भर को योग सिखाते हैं
हम भारत के लोग।
रिश्ते-नाते दिल से निभाते
चाचा, ताऊ, मामा, फूफा को अंकल ना बुलाते..
हम भारत के लोग।
क्या हुआ! अगर कभी अनाज के लिए मोहताज थे
आज दुनिया का पेट भरते
हम भारत के लोग।
अपने ज्ञान का डंका बजवाते,
बड़ी-बड़ी विदेशी कम्पनियों को चलाते
चाँद पर तिरंगा लहराते
हम भारत के लोग।

धरती का सीना चीरने की हिम्मत रखते,
परमाणु का बम जेब में रखते
मगर अपने दिल में मोहब्बत सब के लिए रखते हैं
हम भारत के लोग।
इतिहास लिखा होगा अंग्रेजों ने,
अरे! हमारा इतिहास लिखा होगा अंग्रेजों ने
मगर अपना संविधान खुद लिखते
हम भारत के लोग।
सादा जीवन उच्च विचार
सबको नमस्कार करते
हम भारत के लोग।

वैज्ञानिक बी (रसायन)
केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड, पश्चिमी क्षेत्र,
जल शक्ति मंत्रालय, जयपुर



राजभाषा हिन्दी

सिकंदर साहनी

माननीय महोदय,

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित,
धारा-343 एवं 351 के अंतर्गत अधिदेशित,
राजभाषा हिन्दी इस राष्ट्र की अस्मिता, एकता एवं
सांस्कृतिक संप्रभुता का प्रतीक है।
यह वह पावन भाषा है जिसमें महामहिम राष्ट्रपति का
अभिभाषण गूँजता है,
माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय अंकित होते हैं,
और संघ की समस्त कार्यवाहियाँ विधि-सम्मत रूप से
संचालित होने की आकांक्षा रखती हैं।

किंतु दुखद सत्य यह है कि
अनेकानेक शासकीय कार्यालयों में आज भी
हिन्दी में प्रारूपित अभिलेखों पर
लाल स्याही से अंकित होता है-

Resubmit in English only.

यह केवल भाषाई नहीं,
वरन् भावनात्मक एवं संवैधानिक अपमान है।
हम, इस देश के वे साधारण कर्मचारी,
जो प्रातः नौ बजे से सायं छह बजे तक
फाइलों के मध्य अपनी आत्मा को दफन करते हैं,
शपथ लेते हैं कि
राजभाषा नीति के क्रियान्वयन हेतु
प्रत्येक नोटशीट पर, प्रत्येक टिप्पणी में,
हिन्दी को प्राथमिकता देंगे।
हम जानते हैं,
फाइल लौट सकती है,

वेतन वृद्धि रुक सकती है,
प्रमोशन अटक सकता है,
परंतु हमारी अंतरात्मा की आवाज नहीं रुकेगी।
क्योंकि हिन्दी केवल भाषा नहीं,
यह हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है,
हमारा संवैधानिक धर्म है,
हमारी सांस्कृतिक पहचान है।
अतः विनम्र निवेदन है कि
आइए, हम सब मिलकर
संविधान के आदर्शों को साकार करें,
और यह संकल्प लें कि
आने वाली प्रत्येक फाइल
हिन्दी में प्रारंभ होकर
हिन्दी में ही पूर्ण होगी।

यह हमारा भावनात्मक दायित्व ही नहीं,
राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा-3(3) का कानूनी
अनुपालन भी है।

जय हिन्द !

जय हिन्दी !!

भारत माता की जय !!!

(एक साधारण शासकीय कर्मचारी की ओर से
जो फाइलों के बीच भी
संविधान की आत्मा को जीवित रखता है)

वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
मुख्य अभियंता कार्यालय, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग
विधाधर नगर, जयपुर, राजस्थान।



दिनांक 30.01.2025 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का राष्ट्रगान के साथ समापन का दृश्य।



मुख्यालय, उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर में दिनांक 27.11.2025 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन।



दिनांक 23.09.2025 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, जयपुर में हिंदी कार्यशाला का आयोजन।



दिनांक 10.10.2025 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय को नगर राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी।



दिनांक 24.12.2025 को प्रधान कार्यालय, उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का दृश्य।



केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, पश्चिम क्षेत्र, जयपुर द्वारा भूजल प्रबंधन एवं संरक्षण पर त्रि-स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन।



जनगणना प्री टेस्ट-2027 प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते हुए निदेशक, श्री बिष्णु चरण मल्लिक।



राजस्थान भू-स्थानिक निदेशालय जयपुर में हिंदी पखवाडा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान पत्रिका के विमोचन का दृश्य।



जलमहल पर भारतीय वायु सेना के मार्शल अर्जन सिंह की 106वीं जन्मशताब्दी समारोह के आयोजन के अवसर पर ग्रुप कैप्टन विनय भारद्वाज, स्टेशन कमांडर, वायु सेना स्टेशन, जयपुर एवं अन्य अधिकारीगण।